हमारे पूर्वाचार्य खण्ड-२

वेद शास्त्र पुराण पारंगत सभी संत समाज के
वन्दनीय महापुरुष जगद्गुरु श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज

स्वनामधन्य श्रीपूज्यपाद अनन्तश्री विभूषित
पं. श्रीरामवल्लभा शरणजी महाराज
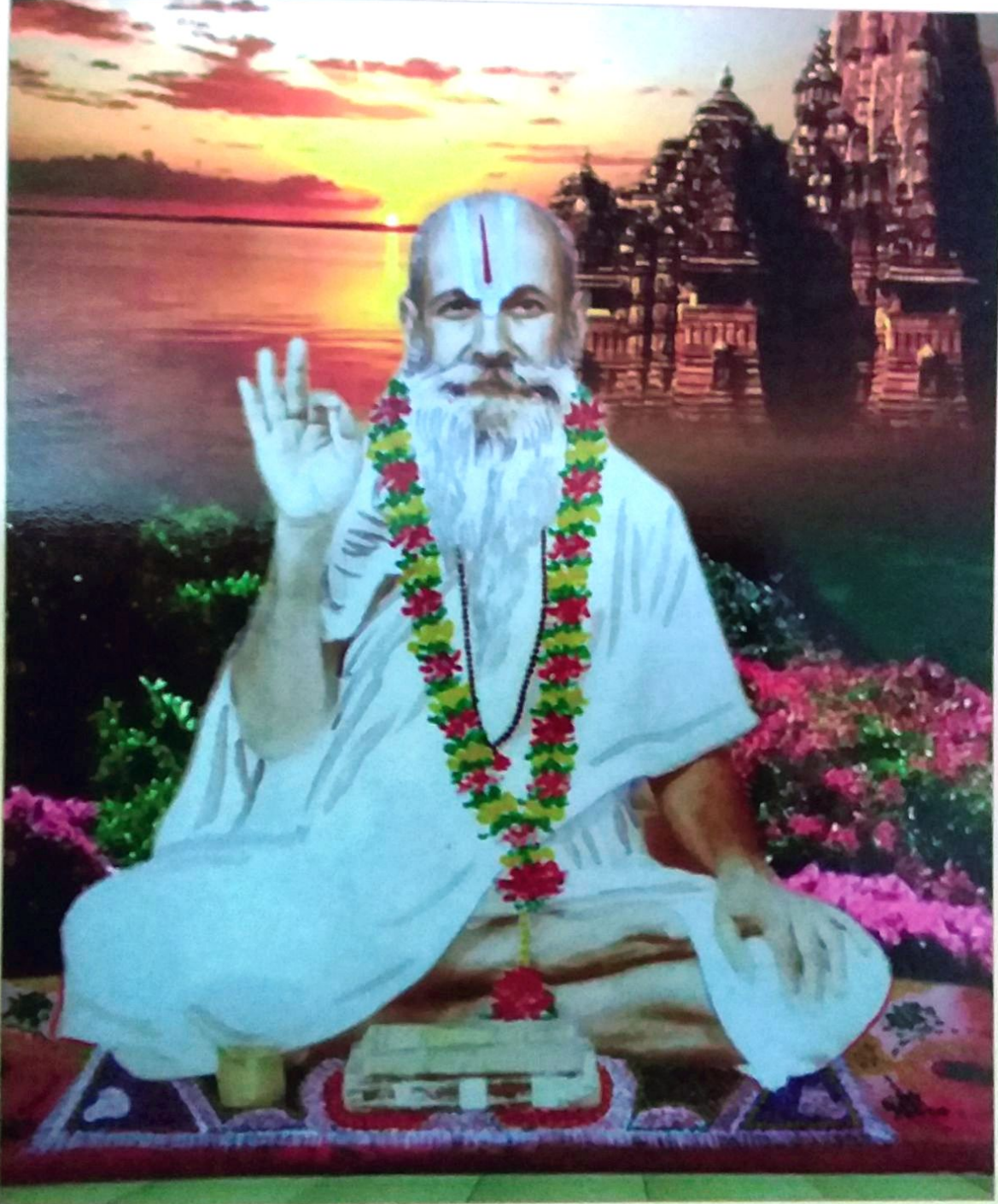
प्रातः स्मरणीय श्रीपूज्यचरण अनन्तश्री विभूषित
पं. श्रीरामपदारथदासजी महाराज 'वेदान्ती'

स्वनामधन्य संतसमाजभूषण अनन्तश्री विभूषित
पं. श्रीहरिनामदासजी महाराज 'वेदान्ती'
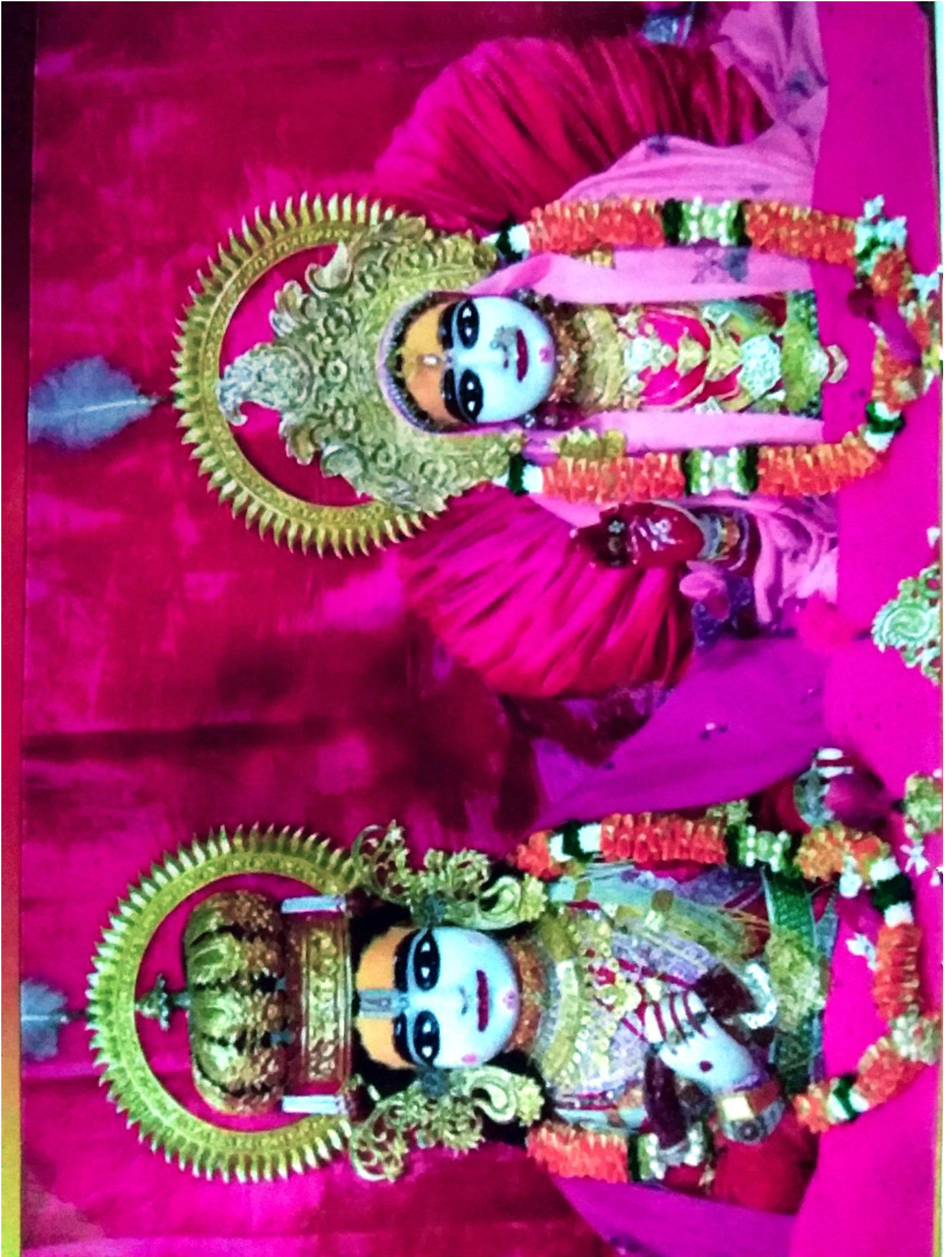
ऊँ गुं गुरवे नमः

हमारे पूर्वाचार्य खण्ड-२

वेद शास्त्र पुराण पारंगत सभी संत समाज के वन्दनीय महापुरूष जगद्गुरू श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज का दिव्यचरित्र

अनन्त श्री सम्पन्न स्वामी श्री रामहर्षण दास जी
महाराज के कृपा पात्र–
लेखक – श्री सीताराम वल्लभ दास (स्वामीशरण)
– श्री अवध धाम

प्रथम संस्करण – पुस्तक संख्या
प्रकाशन तिथि – गुरूपूर्णिमा सं. २०७६
दि.१६.०७.२०१९
मुद्रक – न्यू मॉडल इंपेक्स प्राइवेट लिमटेड, दिल्ली
पुस्तक प्राप्ति स्थान – श्री राम वल्लभाकुंज, जानकीघाट,
अयोध्या

श्री महंत जी महाराज का आशीर्वाद
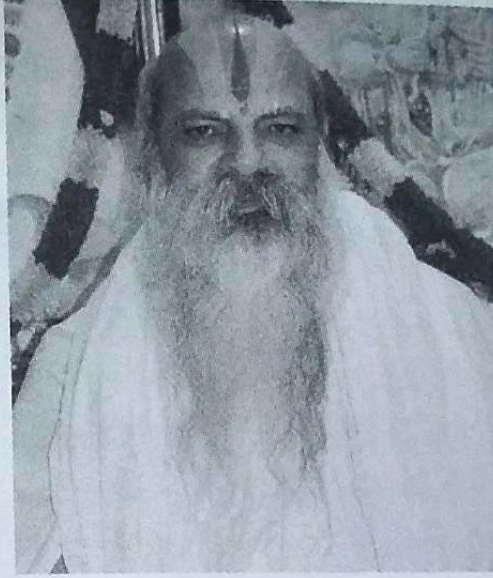
श्री सीतानाथ समारम्भां, श्री रामानंदार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां, बन्दे श्री गुरु परम्पराम्।।

हमारा श्री सम्प्रदाय, सनातन सम्प्रदाय है। श्री राम जी से लेकर हमारे गुरुदेव तक जितने भी आचार्य हुए हैं, सभी बड़े ही प्रभावशाली और विद्वान महापुरुष हुए हैं। प्रेमावतार पंचरसाचार्य स्वामी श्री राम हर्षण दास जी के कृपापात्र श्री स्वामी शरण जी ने अनन्त श्री सम्पन्न जगद्गुरु पण्डित श्री राम वल्लभा शरण जी का दिव्य चरित्र लेखन किया है, यह बड़ा ही उत्तम प्रयास है। श्री महाराज जी, श्री राम जी के एक विशेष अंश ही थे। साधु समाज में आज भी उनके गुणगान गाये जाते हैं। साधु, सन्त और भक्तवृंद श्री महाराज जी के चरित्र को पढ़कर साधना के मार्ग में मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

म. श्री राम शंकर दास वेदांती,
श्री राम वल्लभा कुंज,
श्री अयोध्या धामः

ॐ गुं गुरवे नमः

श्री सीतानाथ समारम्भां श्री रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे भी गुरू परम्मराम्।।

१. श्री रामजी
२. श्री सीता जी
३. श्री हनुमान जी
४. श्री ब्रह्मा जी
५. श्री वशिष्ठ जी
६. श्री पराशर जी
७. श्री व्यास जी
८. श्री शुकदेव जी
९. श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी
१०.श्री गंगाधराचार्य जी
११.श्री सदाचार्य जी
१२.श्री रामेश्वराचार्य जी
१३.श्री द्वारानन्दाचार्य जी
१४.श्री देवानन्दाचार्य जी
१५.श्री श्यामानन्दाचार्य जी
१६.श्री श्रुतानन्दाचार्य जी
१७.श्री चिदानन्दाचार्य जी
१८.श्री पूर्णानन्दाचार्य जी
१९.श्री श्रियानन्दाचार्य जी
२०.श्री हर्यानन्दाचार्य जी
२१.श्री राघवानन्दाचार्य जी
२२. श्री रामानन्दाचार्य जी
२३.श्री योगानन्दाचार्य जी
२४.श्री गयानन्दाचार्य जी
२५.श्री तुलसी दास जी
२६.श्री नथूराम जी
२७. श्री चोगानी जी
२८.श्री ऊधौ मैदानी जी
२९.श्री खेमदास जी
३०.श्री रामदास जी
३१.श्री लक्ष्मणदास जी
३२.श्री देवदास जी
३३.श्री भगवान दास जी
३४.श्री बालकृष्ण दास जी
३५.श्री वेणीदास जी
३६.श्री श्रवण दास जी
३७.श्री रामवचन दास जी
३८.श्री रामवल्लभा शरण जी
३९.श्री राम पदारथ दास जी
४०.श्री हरिनाम दास जी
४१.श्री रामशंकर दास जी

निवेदन

श्री गुरू अग्रदेव आज्ञा दई हरिभक्तन को यशगाउ
भव सागर के तरन को, नाहिन और उपाउ।।
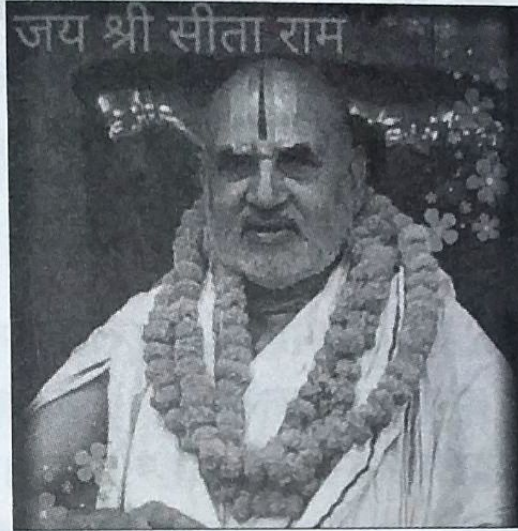
उपरोक्त भक्तमाल जी के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुये मुझ जैसे अल्पज्ञ, साधन हीन शिष्य को अहेतु की करुणा करके हमारे गुरूदेव प्रेममूर्ति पंचरसाचार्य अनन्त श्री सम्पन्न स्वामी श्री रामहर्षण दास जी ने अपने पूर्वाचार्यों के चरित्र लेखन का आदेश दिया था। सर्व प्रथम गुरूदेव का ही चरित्र 'श्री सद्गुरूगौरव गाथा' एक गीत के माध्यम से प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात हमारे द्वाराचार्य भगवान श्री कपिल अवतार श्री योगानन्द्यचार्य, का भी चरित हमारे पूर्वाचार्य प्रथम खण्ड के रूप में प्रकाशित हुआ। अन्य आचार्यों के भी चरित्र लगभग लिखे जा चुके हैं पर प्रकाशित नहीं हैं।

श्री रामानन्दीय सम्प्रदाय के अड़तीसवें आचार्य जगद्गुरू पं. श्री राम वल्लभा शरण जी महाराज का चरित्र अभी हाल में ही लिखा गया है। भगवत विधान ही समझिये दिल्ली निवासी श्री संजीव शंकर जी की दृष्टि श्री महाराज

जी के चरित्र पर पड़ी तो उन्होंने इसके प्रकाशन का भार अपने ऊपर ले लिया।

श्री प्रेम निधि जी के द्वारा रचित 'श्रीसद्गुरू चरितामृत' ग्रन्थ के आधार पर ही श्री महाराज जी का चरित्र लिखा गया है। हम इस ग्रन्थ के रचयिता श्री गंगा प्रसाद जी बहुरा 'प्रेमनिधि जी के चरणों में प्रणिपात करते हुये उनका आभार स्वीकार करते हैं

श्री महाराज जी की महिमा के अनुरूप हमसे लेखन नहीं बन सका इस हेतु हम क्षमा प्रार्थी हैं। फिर भी देशी घी का लड्डू है आड़ा टेढ़ा भी बना हो तो भी लाभ तो करेगा ही। भगवद्भक्त त्रुटियों को सुधारते हुये इस सेवा को स्वीकार करेंगे ऐसा विश्वास है।

देहुदया कर सो वरदानू । साधु समाज भणित सन्मानू
श्री हरि गुरू सन्तों का एक तुच्छ सेवक,

श्री सीताराम वल्लभ दास
(स्वामी शरण)
श्री अवध धाम–
मो० –९१४०९०९५३३
९३०५३५१९४०

श्री सम्प्रदाय (श्री रामानन्दीय सम्प्रदाय) के अड़तीसवें आचार्य
ज. गु पं. श्री राम बल्लभाशरण जी महाराज

छप्पय

श्री राम वल्लभा शरण की कीर्ति जगत में छा रही

पन्ना जिला रणेह जन्म की भूमि सुहाई।
पीछे पोड़ी वास पवनसुत सेवा पाई।।

श्री सद्गुरू की कृपा, अवध में कथा सुनाये।
सुन्दर भाव समेत राम अर्चा विधि गाये।।

पग पग पर हनुमत कृपा युगल कृपा जय गा रही।
श्री राम वल्लभा शरण की कीर्तिजगत में छा रही।।

मध्य प्रदेशान्तर्गत पन्ना जिला आज भी हीरा खदान के लिये प्रसिद्ध है। वहाँ के निवासी हीरे की चाह में नीची नजर कर के चलते हैं और कभी–कभी राह चलते – चलते लोगों को हीरे मिल भी जाते हैं परन्तु महापुरुषों ने इन रत्नों को मात्र पत्थर का टुकड़ा ही माना है रत्न नहीं। यथा " मूढ़ै पाषाण खण्डेषु रत्न संज्ञा विधीयते"।

इन लौकिक रत्नों में बड़े दोष होते हैं। इन्हें पाने वाला और अधिक माया में डूब जाता है। पर सच्चे रत्न तो सन्त, सद्गुरु होते हैं जिनकी प्राप्ति होने पर जीव अनायास ही भव सागर से पार हो जाता है। जिस पन्ना की पवित्र भूमि से लौकिक हीरे मिलते हैं, वहीं सच्चे रत्न भी निकलते हैं। आइये हम अपने आचार्य परम्परा के 38 वें आचार्य पंडित श्री राम वल्लभा शरण जी की चर्चा करें जिनका जन्म इसी पन्ना जिले के अन्तर्गत रणेह ग्राम में हुआ था।

हमारे आचार्य प्रभु के पितामह कान्यकुब्ज ब्राह्मण वंशावतंस श्री गदाधर त्रिपाठी इसी रणेह ग्राम में रहते थे। उनके जीवन काल की घटना है। पन्ना के हीरा खदान में एक धनुष मिला और कई लोगों ने धनुष की प्रत्यञ्चा चढ़ाने का प्रयास किया पर नहीं चढ़ा सके। पन्ना नरेश भी स्वयं इस कार्य में सफल नहीं हुए। तब एक मन्त्री के सुझाव पर रणेह ग्राम से पं. श्री गदाधर जी को बुलवाया गया। श्री गदाधर जी ने कहा कि हम चढ़ा तो देंगे पर धनुष हम ही ले जायेंगे। इस शर्त को राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

श्री गदाधर जी ने धनुष को एक पत्थर के ऊपर रख कर बायें हाथ से धनुष को झुकाया और दाहिने हाथ से प्रत्यञ्चा चढ़ा दिया। जिस पत्थर पर धनुष को रखा था, अधिक जोर पड़ने से उस पत्थर के कई टुकड़े हो गये। सर्वत्र श्री पंडित जी की जय जयकार होने लगी। त्रिपाठी जी ने वह धनुष राजा को यह कह कर प्रदान कर दिया कि धनुष तो राजा महाराजाओं के पास ही शोभा देता है। हम ब्राह्मणों के लिए तो माला और भजन ही उचित है। पन्ना नरेश बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने दो गांव की जागीर और एक घोड़ा श्री गदाधर जी को प्रदान किया।

श्री गदाधर जी ने अपनी पवित्र भजनमयी कीर्ति का विस्तार किया और जगत के कल्याण हेतु अपने से भी श्रेष्ठ सद्‌गुण सम्पन्न सत्पुत्र को प्रदान कर भगवद्धाम को प्राप्त हुए। उनके पुत्र श्री रामलाल जी थोड़े समय में ही विद्या–बुद्धि से सम्पन्न हो गये। उनका विवाह हुआ और श्री रमा नाम की सर्वगुणसम्पन्ना सब विधि अनुकूल पत्नी को प्राप्त कर श्री रामलाल जी का दाम्पत्य जीवन अत्यन्त सुखमय हो गया।

पति पत्नी मन वचन कर्म से श्री राम भजन के साथ–साथ साधु संतों की सेवा में तत्पर रहते थे। दोनों की बड़ी ही

उदार और परोपकारमयी प्रवृति थी। श्री रामलाल जी को ब्रम्हवेला में स्वप्न में एक साधु का दर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने ब्राह्मण दम्पति को एक वर्ष हेतु जपने के लिये मन्त्र दिया और कहा कि एक वर्ष तक गोपनीयता और लगन से जपने पर श्री रामजी का दर्शन होगा जिनसे भक्ति प्रचारार्थ पुत्र का वरदान मांग लेना क्योंकि भक्ति मार्ग पर चलकर जीवों को भवसागर से पार लगाने जैसा परोपकार दूसरा कोइ नहीं है, साथ ही इससे भगवान जैसे प्रसन्न होते हैं, वैसे अन्य किसी उपाय से नहीं।

स्वप्न टूटने पर श्री राम लाल जी ने स्वप्न की सारी वार्ता धर्म पत्नी को सुनाई और तदनुसार मन्त्र का जाप प्रारम्भ कर दिया। एक वर्ष की विधिवत साधना पूर्ण होने पर प्रभु श्री रामजी ने दर्शन दिये। दम्पति ने भक्ति प्रचार हेतु एक भगवद्भक्त पुत्र की याचना की जिसे प्रभु ने स्वीकार किया। परिणामतः माताजी को गर्भ की प्राप्ति हुई और विक्रम सं. १६१५ के आषाढ़ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी अभिजित मुहूर्त में परम भाग्यशालिनी माता श्री रमा देवी जी के गर्भ से श्री गुरुदेव भगवान प्रकट हुये तब सब तरफ आनंदमय वातावरण छा गया। शीतल सुगन्धित वायु बहने लगी। पिता श्री राम लाल जी को पुत्र रत्न लाभ जान कर परम हर्ष की प्राप्ति हुई। ग्रामवासी सभी आनन्द के सागर में निमग्न हो गये, ब्राह्मणों ने वेदमन्त्रों का उच्चारण किया। ग्रामीण मातायें सोहर गाने लगीं। पंडित रामलाल जी ने बालक का जातिकर्म संस्कार करवाया और बड़ी ही उदारता से सभी को दान मान से सन्तुष्ट किया। ज्योतिषी ने शिशु के मंगलमय गुणों का वर्णन कर के माता पिता को सुख के सागर में डुबो दिया। विद्वान कुलगुरु ने श्री राम जी के समान ही शुभ लक्षण विचार कर धनुधारी नाम प्रदान किया।

बधाई—

बाजै बाजै हो सद्‌गुरु जन्म बधाई बाजै बाजै हो।
सद्‌गुरु जन्म जानि के शिष्यन, आनंद धूम मचाई हो।
बंदनवार पताका फहरत विप्रन वेद सुनाई हो।
उर महँ भरे उछाह अधिक अति, सोहिल गीत सुनाई हो।
इत्र अरगजा कुमकुम केसर, छिड़कत लोग लुगाई हो।

नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, सबके चित्त चुराई हो।
भूले मोद मगन मन सिगरे सर्वस्व रहे लुटाई हो।
हर्ष विवश सब उछल उछल के सुमनन झरी लगाई हो।
'हर्षण' धनि धनि शिष्यन भावा प्रिय परमारथ पाई हो।

धनुधारी जी के जन्म के पूर्व श्री पंडित रामलाल जी को एक पुत्र और एक कन्या की प्राप्ति हो चुकी थी। बाद में एक और कन्या का लाभ हुआ। पंडित जी ने बड़ी पुत्री का विवाह सम्पन्न किया। भगवत् विधान धर्म पत्नी श्री रमा देवी भी भगवान के धाम चली गईं और बड़े पुत्र ने भी साकेत का मार्ग स्वीकार कर लिया। एक रात्रि स्वप्न में श्री रामलाल जी को एक महापुरुष ने दर्शन दिया और आदेश किया कि अब अपने घर–ग्राम को छोड़ कर किसी अन्य ग्राम में जाकर भगवान का भजन करें। स्वप्न में सन्त का आदेश मान कर श्री रामलाल जी ने अपने ग्रामों को बेच दिया। उससे प्राप्त जो द्रव्य मिला उसे साधु ब्राह्मणों की सेवा में खर्च कर दिया। उस समय धनुधारी चार वर्ष के थे। श्री रामलाल जी ने रणेह ग्रम छोड़ा और सतपुत्र तथा दोनों बालिकाओं को लेकर नर्वदा जी में स्नान किये। उनके एक कुटुम्बी भाई सिमरा ग्राम में रहते थे, तीन वर्ष तक उनके गृह में निवास किया। इसी बीच दो बार एक अपरिचित दिव्य सन्त ने आकर बालक धनुधारी को गोद में बिठा कर दुलार किया और कुछ कान में संदेश भी सुनाया साथ ही निर्देश दिया कि अब से आप पोंड़ी ग्राम में रहेंगे। मैं वहाँ आकर मिलूंगा और एक अनुपम स्तोत्र का प्रयोग बतलाऊंगा।

सिमरा ग्राम में निवास करते समय श्री राम लाल जी को स्वप्न में श्री हनुमान जी ने दर्शन दिये और आदेश भी कि अब आप पौड़ी ग्राम में निवास कर वहाँ के भक्तों को सुख दीजिये। पंडित जी ने सिमरा ग्राम वासियों से विदाई ली और सं. १६२२ में पोंड़ी ग्राम को अपने पुत्र और पुत्री को लेकर निवास स्थान बनाया। पुण्यात्मा सिद्धे नाम के एक पटेल ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ उन्हें अपने घर में ठहराया। पंडित श्री रामलालजी, विशेषकर उनके बालक भगवान का दर्शन करके ग्राम वासियों को बड़ा हर्ष हुआ। थोड़े काल में ही समवयस्क बालकों को धनुधारी जी प्राणों के समान प्यारे लगने लगे। धनुधारी जी भी ग्रामीण बालकों के साथ, कभी रामलीला करते, कभी कीर्तन करते और कभी–कभी प्रेम से भगवान श्री सीताराम जी की पूजा में मगन हो जाते।

पोंड़ी ग्राम के समीप ही एक श्री सीतारामजी का मंदिर था। मंदिर में एक विशालकाय श्री हनुमान जी भी विराजे थे। श्री हनुमान जी के श्री विग्रह का निर्माण केवल पुष्य नक्षत्र में ही हुआ था। अर्थात् पुष्य नक्षत्र भर कारीगर काम करते थे। पुष्य बीतने पर काम बंद हो जाता था, पुनः पुष्य की प्रतीक्षा की जाती थी। अस्तु श्री हनुमान जी बड़े ही प्रभावशाली और चमत्कारी थे। श्री धनुधारी जी नित्य ही श्री सीतारामजी के दर्शन करते और श्री हनुमान जी के सामने बैठ कर भजन करते थे। एक बार स्वप्न में बालक श्री धनुधारी जी को श्री हनुमान जी ने दर्शन दिये और कहा कि श्री सीताराम जी की यह इच्छा है कि आप और आपके पिता जी अब मन्दिर में निवास करें और मन्दिर की सेवा पूजा सभालें। इसी कारण तो आपके पिताजी को स्वप्न में दर्शन देकर पोंड़ी में बुलाया गया है।

श्री धनुधारी जी ने स्वप्न की सारी वार्ता पिताजी को सुनाई। किन्तु पिता जी को बड़ा असमंजस हुआ कि जब तक कोई व्यक्ति न कहे तब तक हम स्वयं से पूजा कैसे संभाल लें। तब हनुमान जी ने ही विधान बनाया।

जो पुजारी पूजा करते थे अगले दिन वे पागल हो गये। नंबरदार जो मंदिर की सारी व्यवस्था करते थे – उन्होंने श्री रामलाल जी से निवेदन किया कि जब तक हमें कोई पुजारी नहीं मिलता तब तक आप मंदिर की सेवा पूजा संभाल लीजिये। श्री रामलाल जी ने पूजा संभाली कि कुछ दिनों में नंबरदार कहीं से साधु ले आये और उन्हें सारी व्यवस्था सौंप दी किन्तु हनुमान जी की लीला तो कुछ और ही थी। दो ही दिनों में वह पागल हो गया और पूजा श्री रामलाल जी को सौंप दी। इस प्रकार से नंबरदार चार बार पुजारी खोजकर लाये पर चारों ही पागल हो गये। तब नंबरदार एक प्रतिष्ठित साधु श्री नरसिंह दास के कृपा पात्र सेवादास जी को लेकर आए। सेवादास जी ने दो माह तक सेवा संभाली तब तक कोई विघ्न बाधा नहीं हुई पर एक दिन वह मंदिर के शिखर पर चढ़ कर कलश को सुधार रहे थे कि अचानक उचट कर निकट के तालाब में गिरे।

गाँव के लोगों ने जल से बाहर निकाला। पुजारी के मुँह से रक्त बह रहा था। किसी ने नरसिंह दास को खबर दी तो वे दुखी होकर अपने मृतप्राय शिष्य को उठा कर ले गये। चौबीस घण्टे में उनको होश आया। नरसिंह दास जी ने नंबरदार से कह दिया कि तुम और कोई खोज लो ये सेवा हमारे वश की बात नहीं है।

नंबरदार दुखी होकर अब अन्य पुजारी खोजने का विचार करने लगा तब रात्रि में उसे श्री हनुमान जी ने विकराल रूप में दर्शन दिया और डांट कर कहा–मूर्ख तुझे अभी भी चेत नही आया। प्रातः काल ही मंदिर की सेवा पूजा श्री रामलाल जी को सौंप दे। अगर अन्यथा विचार किया तो तेरे प्राण ले लूँगा। प्रातः काल ही नंबरदार ने मंदिर और सेवा, सारी व्यवस्था श्री रामलाल जी को सौंप दी। सं .१६२३ में श्री रामलाल जी अपने पुत्र तथा पुत्री सहित पोंड़ी के मंदिर में निवास बनाये और बड़े प्रेम से मंदिर की सेवा पूजा करने लगे।

शुभसमय विचार कर धनुधारी जी का विधि विधान से यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, तत्पश्चात श्री रामलाल जी ने बेटी का विवाह भी सम्पन्न कराया। धनुधारी जी का विद्यारंभ प्रारम्भ हुआ। पन्द्रह दिन में ही रामचरित मानस का पाठ करना आ गया और तभी से प्रति दिन नियम से मानस का पाठ प्रारम्भ हो गया।

पौंडी ग्राम के एक सज्जन के बालक की बारात में धनुधारी जी गये थे। पिता जी मंदिर में थे। तभी एक साधु आये उन्होंने धुनर्धारी को करने योग्य प्रज्ञावर्धन स्तोत्र समझाया उसके प्रयोग की विधि भी समझाई तथा गीता की पुस्तक दे कर चले गये। बारात से लौटने पर धनुधारी जी को जब संत के आगमन की जानकारी हुई तब बहुत रोये और पिताजी से बतलाये कि ये वही संत थे जो इसके पूर्व हमसे दो बार मिल चुके हैं। संत के निर्देशानुसार प्रज्ञावर्धन स्तोत्र का प्रयोग सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसका धनुधारी जी के जीवन में अलौकिक अकथनीय प्रभाव हुआ।

श्री रामलाल जी पुत्र के सद्गुणों को विचार कर परम हर्षित रहते थे। वे क्रमशः मंदिर की सेवा पूजा सब अपने सर्वविधि सुयोग्य पुत्र को सौंप कर निश्ंचित होकर पूर्णतया राम भजन करते हुये सं. १६३२ में साकेत धाम को प्रस्थान किये। धनुधारी जी ने पितृ–वियोग से अत्यन्त दुखी होने पर भी उनके सम्बन्ध में सारे कृत्यों को श्रद्धायुत् सम्पन्न किया। भगवान की सेवा पूजा करते हुये श्री धनुधारी जी के मन में भाव आया कि मुझे कुछ दिन काशी में रह कर अध्ययन कर लेना चाहिये पर पूजा कौन संभाले।

धनुधारी जी ने अपने प्रति अति श्रद्धा रखने वाले एक सज्जन के सामने अपने हृदय की बात रखी। उक्त सज्जन ने हथलेवा महगवां ग्राम में रहने वाले प्रभु के अनुरागी ज्ञानी सिद्ध सन्त का नाम सुझाया और स्वीकृति मिलने पर उनको

ले भी आये। इन महापुरुष का नाम श्री रामवचन दास जी था। धनुधारी जी ने इन तेजस्वी श्री रामानन्दीय सन्त का दर्शन कर अतीव श्रद्धा से दण्डवत प्रणाम किया और अपनी बात निवेदन कर संपूर्ण स्थान उन्हें सौंप दिया। श्री रामवचन दास जी ने कहा कि तुम्हारी रुचि देख कर स्थान हमने संभाल लिया है। तुम जब चाहोगे तब इसे पुनः ले लेना। उन्होंने कहा ही नहीं, श्री महाराज जी ने यह बात लिख कर भी दे दी।

धनुधारी जी ने मुहूर्त विचार करवाया और दस दिन बाद काशी जाने का मुहूर्त निकला। एक दिन श्री राम वचन दास जी ने धनुधारी जी से पूछा कि काशी जाने का उद्देश्य क्या है? उत्तर मिला, काशी में जाकर विद्या अध्ययन करूंगा। श्री रामवचन दास जी ने पुनः कहा कि विद्या अध्ययन करने और विद्वान भी हो जाने से क्या मिलेगा यदि अपने स्वरूप को तथा परात्पर प्रभु श्री सीताराम जी को नहीं जाना तब यदि शहंशाह भी हो गये, यदि त्रिलोकी के नाथ भी हो गये तो भी क्या हाथ लगा? हनुमान जी ने रावण को समझाया है–

राम विमुख संपति प्रभुताई
जाइ रही पाई बिन पाई।। तथा
जाना मैंने जननी जनक भाई बहिन जाना
खाना पीना जाना और आना जाना जाना है।
सुखजाना दुख जाना, अपना पराया जाना,
कुटुम्ब कबीला सब धीरे धीरे जानाहै।
शत्रु जाना मित्र जाना, अकड़ मकड़ जाना,
जाना राजाराम का जो सम्पति खजाना है।
सब कुछ जाना, पर कुछ नहीं जाना,
यदि उसको न जाना जिसके समीप जाना है।

संत श्री रामवचन दास जी के अत्यंत प्रभावशाली वचनों को सुन कर धनुधारी जी को बड़ा हर्ष हुआ उन्होंने प्रश्न किया कि जीव परमात्मा को जान सके इसका क्या उपाय है। संत ने कहा कि अपने नेत्र बंद करो। नेत्र बन्द करने पर श्री महाराज ने अपना कर–कमल धनुधारी जी के सिर पर रख दिया जिसका अलौकिक प्रभाव धनुधारी जी को दीख पड़ा। वे कर–कमल अलग करते ही उठे और चरणों में साष्टांग दण्डवत पूर्वक प्रार्थना किये कि हमें आप मन्त्र–दीक्षा प्रदान कीजिये।

प्रार्थना स्वीकृत हुई और श्री महाराज रामवचनदास जी ने श्री रामनवमी के दिन श्री मन्त्र राज का उपदेश दिया। धनुधारी जी ने विरक्ति हेतु प्रार्थना की परन्तु श्री महाराज जी ने कहा कि कुछ दिन विरक्त वेश में रहिये ऱ्पौर श्रीराम मन्त्र का जप करिये। आगे चल कर अनुकूल समय और परिस्थिति विचार कर विरक्ति प्रदान करेंगे। यद्यपि वहिन के स्वसुर ने विरोध भी किया परन्तु धनुधारी जी की दृढ़ता के सामने किसी की कुछ चली नहीं। तब विक्रम सं.१६३५ में गुरुदेव ने श्री धनुधारी जी को विधिवत विरक्त दीक्षा प्रदान की और नाम दिया श्री रामवल्लभा शरण। तबसे श्री महाराज जी अपने गुरूदेव की मन वचन कर्म से सेवा करने लगे और गुरूदेव भगवान भी अपने प्रिय शिष्य पर निरन्तर कृपा बरसाते रहते। काशी जाने वाली बात स्थगित हो गई।

गुरूदेव श्री रामवचन दास जी अनेक सिद्धियों ओर प्रयोगों के ज्ञाता थे। उन्होंने अनेक प्रयोग अपने शिष्य से करवाये जिनका फल जगत में भक्ति का प्रचार हो यही मांगा। गुरूदेव ने अपने शिष्य से श्री हनुमान पताका नामक प्रयोग करवाया जिसमें कुछ विघ्न आई परन्तु गुरूदेव की कृपा से विघ्न दूर हुआ और श्री महाराज जी को श्री हनुमान जी ने साक्षात प्रकट होकर दर्शन दिये। सं. १६३७ तक गुरू सेवा में तत्पर रहे।

श्री राम दास नाम के भजनपरायण श्री राम चरित मानस के प्रेमी विचरण शील सन्त एक दिन पोंड़ी मंदिर में आये। गुरू शिष्य का दर्शन कर अति प्रसन्न हो कुछ दिनों तक मंदिर में रम गये। मंदिर में दोनों समय आरती स्तुति होती सायंकाल कथा और कीर्तन की धूम मची रहती। ग्राम वासी दर्शन श्रवण कर अपने जीवन का लाभ प्राप्त करते थे। श्री रामदास जी ने कुछ दिन पोंड़ी मंदिर में रह कर प्रस्थान करना चाहा। श्री महाराज जी का भी मन राम दास जी के साथ जाने का हुआ। गुरूदेव से निवेदन किया। गुरूदेव की अपने प्रिय शिष्य में बड़ी प्रीति थी अतः सजल नयन स्वीकृति दी और साथ ही राह खर्च के लिये एक सौ रुपये भी प्रदान किये।

पोंड़ी से चलकर सोहावल ग्राम में दो माह तक रह कर वहाँ के भक्तों को अति सुख प्रदान किया। पश्चात् चित्रकूट में एक साधु आश्रम में आसन लगाया। उसी स्थान के एक नाम जापक सन्त के सम्पर्क से उनके साथ अर्ध रात्रि में जब सब लोग सो जाते तब वे श्री कामदगिरि की परिकमा करते और एक विविर में दिव्य नाद का श्रवण करते थे। अति चित्ताकर्षक अनेक वाद्यों से संयुक्त अति मधुर स्वर का गायन सुनकर मगन हो जाते थे। एक बार श्री महाराज जी मध्याह्न में युगल प्रभु का नाम जपते हुये श्री कामता नाथ जी के निकट पहुँच गये। उमड़ते हुये बादल आ गये और घनघोर वर्षा होने लगी। पर्वत से जल की धारा गिर रही थी। भाव में भरे प्रभु के चरण रज से युक्त जल की धारा के नीचे खड़े हो गये। तेज जल की धारा श्री महाराज जी के शीश पर गिर रही थी।

अचानक एक विशालकाय बन्दर आया और महाराज जी का हाथ पकड़ कर उस जल धारा से अलग कर दिया, साथ ही बन्दर अन्तर्ध्यान हो गया। महाराज कुछ समझ नहीं पाये तब तक उसी जल धारा के साथ ही एक विशाल प्रस्तर खण्ड पर्वत से टूट कर गिरा जिससे नीचे के पत्थर टुकड़े टुकड़े

हो गये। अब श्री महाराज जी को समझ आया कि श्री हनुमान जी ने हमारे जीवन की रक्षा की है– अन्यथा अगर वहीं खड़े रहते तो जीवन लीला ही पूरी हो जाती।

मन्दाकिनी जी का स्नान कामद्‌गिरि की परिक्रमा, यत्र–तत्र प्रभु पद अंकित अनेक स्थलों का दर्शन, साथ ही भजन करते हुये अनेक दिव्य सन्तों का समागम प्राप्त करते हुये चार महीनों तक रह गये। चित्रकूट धाम को वन्दन कर वहाँ से प्रस्थान किया और तीन दिन तक श्री प्रयागराज में निवास किया। रामदास जी के कुटुम्ब परिवार के लोग प्रयाग के निकट किसी ग्राम में रहते थे। श्री रामदास जी का आगमन सुन कर उनसे मिले साथ ही श्री महाराज जी को भी प्रणाम किया। सबको उदास देखकर उदासी का कारण पूछा तब उन्होंने बतलाया कि एक साहूकार का हमारे ऊपर रु. एक सौ कर्जा है वह डिगरी करवा कर हमारी चल–अचल सम्पति की नीलामी करवा रहा है। इसी की बड़ी चिंता है कि जब जीविका ही समाप्त हो जायेगी तो जीवन कैसे चलेगा।

उन सभी के संकट को विचार कर श्री महाराज जी का हृदय करुणा से भर आया और श्री गुरूदेव ने जो राह खर्च के लिये एक सौ रुपये दिये थे वे सभी रुपये चुपचाप उन लोगों को प्रदान कर दिये।

संत हृदय नवनीत समाना।
कहा कविन पै कह्यो न जाना।।
निज परिताप द्रवहिं नवनीता।
पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता।।

चौथे दिवस दोनों सन्तों ने श्री प्रयाग राज से प्रस्थान किया। एक साधु स्थान में रामदास जी रुक गये पर श्री महाराज जी आगे बढ़ गये। काशी पहुँचने के पूर्व ही नई बाजार ग्राम के जानकी भक्त नामक वैश्य के अतिथि हुये। महाराज जी जैसे महापुरुष को प्राप्त कर वह भक्त बड़ा ही

प्रसन्न हुआ। वह प्रतिदिन बीस साधुओं को भोजन कराकर ही प्रसाद पाता था। भक्त के आग्रह को देख कर महाराज श्री कुछ दिन वहाँ रह गये।

एक दिन 20 साधुओं की पंगत चल ही रही थी कि अचानक ५0–६0 साधुओं की जमात और आ गई। तथा सभी नवागन्तुक सन्त सीधे पांत में बैठ गये। वैश्य भक्त घबड़ा गया और महाराज जी से निवेदन किया। महाराज ने उसे आश्वस्त किया और कहा कि डरो नहीं श्री राम जी का भण्डार है कुछ भी कमी नहीं पड़ेगी। महाराज ने भण्डार में जाकर रसोई के ऊपर अपना वस्त्र ढंक दिया। भरपेट सब ने भोजन किया। पीछे वस्त्र हटाया तो पूरी सामग्री बची रही। चमत्कार देखकर वैश्य भक्त आश्चर्य चकित हो महाराज जी के चरणों में पड़ गया।

दूसरे ही दिन महाराज जी काशी के लिये प्रस्थान कर गये। रामदास वैश्य के घर पर आसन लगाया और गंगाजी में स्नान किया तथा भगवान श्री विश्वनाथ जी का दर्शन कर अपने को धन्य माना। कुछ दिनों तक काशी में निवास कर पुनः नई बाजार के जानकी भक्त को कृतार्थ किया। वहीं पर प्रभु के अनुरागी सन्त श्री हरिहरदास से भेंट हुई। हरिहरदास जी के साथ पुनः काशी आये। रात्रि में श्री भगवान विश्वनाथ जी ने दर्शन दिये और कहा कि अब आप श्री अयोध्या जी जाइये और कथा सुना कर सन्त भक्तों को सनाथ कीजिये।

स्वप्न वाली वार्ता हरिहर दास जी को सुनाई और स्नान कर अति प्रसन्न हो श्री अवध के लिये प्रस्थान कर गए। सं.१६३७ कार्तिक शुक्ला नवमी (अक्षय नवमी) को श्री महाराज जी ने श्री अयोध्या धाम में प्रवेश किया। छोटी छावनी स्थान में आसन रख कर पावन सरिता श्री सरयूजी में स्नान किया और अवध की चौदह कोशी परिक्रमा हेतु दोनों सन्तों ने प्रस्थान किया। अक्षय नवमी को बहुत बड़ी संख्या

में भक्त वृन्द श्री धाम की परिक्रमा करते हैं। नाम जप करते हुये दोनों सन्तों ने परिक्रमा पूर्ण की और छोटी छावनी के श्री महन्त वैष्णवदास जी को दण्डवत कर उनकी सहर्ष अनुमति प्राप्त कर आसन लगाया। अवध के सन्तों को भी आपके दर्शन करके बड़ी प्रसन्नता हुई।

बड़ी छावनी के सुप्रसिद्ध भजनानन्दी वयोवृद्ध संत श्री विद्यादास जी के दर्शन का लाभ मिला। परिचय होने पर उन्होंने अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण व्यवहार किया जबकि वे सतत् भगवतध्यान में ही रहते थे, किसी की तरफ दृष्टि उठाकर देखते भी नहीं थे। श्री विद्यादास जी ने बतलाया कि हमने तुम्हारे गुरुदेव के बाबागुरु श्री वेणी दास जी से ही भजन की पद्धति मन्त्रराज पुरश्चरण की रीति समझी है। वही रीति हमने स्वप्न में तुम्हारे पिता श्री को प्रदान की थी। कई बार तुम्हें बाल्यावस्था में दर्शन देकर दुलार किया तथा प्रज्ञावर्धन स्तोत्र भी समझाया था।

श्री महाराज संत श्री विद्यादास जी से अत्यन्त रहस्यमय प्रसंगों को सुनकर अतीव प्रसन्न हुये और चरणों में पड़कर प्रार्थना की कि दास को भी भजन व पुरश्चरण की विधि प्रदान करने की कृपा की जाए।

संत ने आश्वासन दिया कि अभी जाइये, फिर किसी भी समय आकर समझ लेना, हम अपने पास जो विद्या है वह सभी तुम्हें प्रदान करेंगे परन्तु यह वार्ता किसी को बतलाना नहीं।

उस दिन से श्री महाराज जी श्री विद्यादास जी के पास समय–समय पर जाकर भजन की रीति समझते और तदनुसार भजन में लीन रहते। संसार से सर्वथा अनासक्त रहते हुये चित्त प्रभु श्री राम जी के चरणों में आसक्त हो गया।

रात्रि के दो बजे आसन छोड़ कर शौचादि से निवृत्त हो कुँआ पर ही स्नान करके सूर्योदय तक अपने आराध्य इष्टदेव श्री सीताराम जी का ध्यान करते।

पश्चात श्री सरयूजी का स्नान कर मध्याह्न के समय साधुओं के साथ पंगत करने के पश्चात तीन बजे तक श्री नाम महाराज की अराधना में लग जाते। तीन बजे शौचादि से निवृत्त हो कर कुछ समय श्री रामचरित मानस का पाठ करते, पीछे श्री हनुमान गढ़ी दर्शन कर संत श्री विद्यादास जी से सत्संग भजन की रीति सीख कर आसन पर आ जाते। नौ बजे रात्रि से दो घण्टा प्रभु का ध्यान करके प्रभु चरणों में मन लगा कर शयन करते।

प्रभु के ध्यान में श्री महाराज जी इतने तल्लीन रहते कि जगत व्यवहार का सर्वथा विस्मरण हो जाता था। मानस में लिखा है।

मन तहाँ जहाँ रघुबर बैदेही।
बिन मन तन दुख सुख सुधि केही।। तथा–
जाहि लगन, लगी घनश्याम की।
धरत कहूँ पद परत है कित हूँ, सुधिनहिंछाया घाम की।
जित मुख उठै तितै उठि धावै भूल जात सुधि धाम की।
छवि निहारि नहि रहत सार कछु घरि पल निशि दिन जाम की।।
निन्दा स्तुति करो भले ही मेंड़ तजी कुल ग्राम की।
नारायण बौरी भइ डोलै, रही न काहू काम की।।

साधु स्थानों में ऐसी रीति है कि सभी साधुओं को आश्रम की कोई न कोई सेवा करनी चाहिये। श्री महाराज को जलभरिया की सेवा दी गई थी। आप प्रति दिन समय से जलभरिया की सेवा कर दिया करते थे।

एक दिन भगवत् ध्यान में ऐसे तल्लीन हुये कि सेवा का स्मरण ही नहीं रहा। जब समय पर सेवा नहीं हुई तब रसोईया लोगों ने शोर मचाया। जिसे सुन कर आपको चेत हुआ तब अर्ध चेत अवस्था में श्री महाराज दौड़ कर गये। कुँआ से जल निकालते समय शरीर सुधि न रहने से कुँआ में ही गिर गये।

बड़े जोर की ध्वनि हुई जिसे सुन कर साधु महात्मा दौड़ कर कुँआ पर पहुँचे। सन्तों ने कुँआ के भीतर दृष्टि डाली। तब सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। महाराज श्री जल के ऊपर

खड़े हुये थे। बाहर निकाला गया तो श्री महाराज के वस्त्र की किनारी भी नहीं भीगी थी। श्री महन्त सहित सभी साधु चरणों में पड़े। महन्त जी ने क्षमा मांगी कि हमने आपकी महिमा को नहीं समझा और सामान्य साधु की तरह सेवा में लगा दिया। अब आपको कोई सेवा नहीं करनी है। आप तो भजन करिये हम दो साधु आपकी सेवा में लगाये देते हैं। आप जैसे सिद्ध भजनानंदी संत हमारे आश्रम में रह रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य है। श्री महाराज जी ने बिना सेवा के आश्रम में रहना स्वीकार नहीं किया तब महन्त जी ने भगवान के पारषद अमनिया करने की सेवा प्रदान की। जिसे श्री महाराज जी जब तक छावनी में रहे तब तक करते रहे। उपरोक्त घटना का समाचार पूरे नगर में फैल गया अतः दर्शन करने वालों की भीड़ जुट गई।

जिस प्रकार मंदिर के श्री विग्रह साक्षात ब्रह्म ही माने गये हैं। उनमें धातु या पत्थर का विचार करना अक्षम्य अपराध माना गया है। उसी तरह से लीला स्वरूपों के प्रति भी भगवद्भाव ही रखना चाहिये। उनमें श्रेष्ठ भाव रखने से कितने भक्तों को परमात्मा की साक्षात कृपा प्राप्त हुई है। श्री महाराज के जीवन की एक घटना का वर्णन किया जा रहा है, पाठक ध्यान देकर पढ़े।

श्री अवध के किसी स्थान में एक राम लीला मण्डली के द्वारा राम लीला चल रही थी। श्री गोविन्द आश्रम नाम के साधु लीला के बड़े प्रेमी थे। वे प्रति दिन लीला दर्शन करने जाया करते थे। श्री महाराज जी को भी लीला दर्शन में सुख मिला तो दर्शन करने पहुँच जाते। गोविन्द आश्रम जी ने स्वरूपों को भोग लगाया और उनका प्रसाद भी लिया। पर यह बात महाराज श्री को नहीं रुची। उन्होंने विचार किया कि भले ही ये सीता राम जी के स्वरूप बने हैं परन्तु हैं तो गृहस्थों के ही बालक। तब साधुओं को इनका प्रसाद नहीं लेना चाहिये। ऐसा विचार कर स्वयं न तो प्रसाद ही ग्रहण

किया और न ही प्रणाम किया। वहाँ से अपने आसन पर आ गये।

रात्रि में प्रतिदिन की तरह ध्यान करने लगे पर आज ध्यान में मन ही न लगे। बहुत प्रयास किया, सारी रात बीत गई पर ध्यान में मन नहीं लगा। तब अत्यन्त दुखी होकर विचार किया कि प्रभु ध्यान के बिना तो सारा जीवन ही व्यर्थ है। अतः क्यों न सरयू जी में अपना जीवन ही समाप्त कर दें। आसन से उठ कर श्री सरयू जी के किसी औघट घाट पर पहुँचे तब देखा कि रात्रि वाले स्वरूप सीता राम जी और श्रृंगारी जी वहाँ स्नान कर रहे हैं। आप वहीं पर एक किनारे बैठ गये कि ये लोग यहाँ से जाएं तब हम अपनी जीवन लीला समाप्त करें।

लीला स्वरूपों ने स्नान के पश्चात वहीं तिलक करना प्रारम्भ कर दिया। श्री स्वरूप सीता जी ने अपना तिलक करके श्री महाराज जी से कहा कि आइये आपको भी तिलक कर दें। श्री महाराज जी ने उत्तर दिया कि अभी हमने स्नान नहीं किया श्री किशोरी जी ने कहा कि स्नान करने आये हो या डूब मरने आये हो? महाराज जी की अन्तर्भावना को तो केवल भगवान ही जानते थे अन्य कोई नहीं। तब श्री महाराज जी इन्हें साक्षात भगवान ही जान कर त्राहि माम कहते हुये ज्यों ही प्रणिपात किया त्यों ही स्वरूप और श्रृंगारी की जगह श्री सीता राम जी और हनुमान जी ने प्रकट होकर दर्शन दिये।

भूमि में पड़े हुये आपको श्री राम जी ने अपने निकट बैठा कर समझाया। हममें और हमारे स्वरूपों में कोई अन्तर नहीं मानना चाहिये। अतः उनमें कभी भेद–भाव नहीं करना। वैसे तो सारा विश्व मेरा स्वरूप है फिर– छोटे छोटे ब्राह्मण बालकों को जिन्हें मेरा ही श्रृंगार कर दिया गया है, भला मुझमें और उनमें कहाँ अन्तर है? भावना करने से उन्हीं में भगवत्ता का दर्शन होने लगता

है। अब आज से आपका ध्यान सुदृढ़ होगा। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। मैं तो सदैव आपके साथ हूँ। प्रभु की अमृत वाणी सुनकर महाराज श्री आनन्द सागर में गोता लगाने लगे और प्रभु अंतर्ध्यान हो गये।

इसके पश्चात तो महाराज श्री की स्वरूपों के प्रति अगाध निष्ठा हो गई। एक बार स्वरूप भगवान का श्रृंगार उतरा तो आपने देखा श्री रामजी के स्वरूप को भुजा में अंगद कसकर बांधने से गड़ गया और एक गहरी लकीर पड़ गई है। श्री रामजी का कष्ट विचार कर आपको बड़ी पीड़ा हुई। रात्रि भोजन नहीं किया। सारी रात रोते रहे। श्री राम जी ने दर्शन दिया और जब अपने गड़े हुये निशान रहित स्वस्थ भुजा को दिखाया तब आपको सन्तोष हुआ।

श्री महाराज जी अहर्निशं प्रभु श्री सीतारामजी के ध्यान में मगन रहते। दिन में खान पान अच्छा नहीं लगता। रात्रि में नीद नहीं आती। अस्तु शरीर दुर्बल हो चला। लोग रोग की आशंका करने लगे किन्तु भक्ति का तेज दिन ब दिन बढ़ता जा रहा था।

एक दिन श्री महाराज जी अपने आराध्य प्रभु श्री सीताराम जी का ध्यान कर रहे थे। अचानक श्री हनुमान जी प्रकट हुये और आदेश किया कि श्री किशोरी जी ने सायंकाल आपको श्री कनक भवन में बुलाया है। आपकी अभिलाषा पूर्ण होगी। श्री हनुमान जी अन्तर्हित हुये। और आप सायंकाल कनक भवन में उपस्थित हो गये। जगमोहन में प्रवेश करते ही परिकर समेत श्री युगल सरकार का दिव्य दर्शन हुआ। श्री महाराज जी परमानन्द के सागर में निमग्न हो गये। श्री हनुमान जी ने कहा कि अब तो आप पूर्णकाम हो गये। सरकार को प्रणाम करिये और जाइये। शयन समय और कल श्री सरयू तट पर भी यही दर्शन होगा।

युगल को प्रणाम कर आप चले तो मात्तगैण्ड तक वही दर्शन तथा सायंकाल मंदिर शयन आरती के समय भी वही दर्शन हुआ। दूसरे दिन सरयू किनारे पहुँचने पर श्री जानकी घाट पर पुनः एक रमणीक वाटिका के मध्य युगल सरकार ने अपने परिकरों समेत दर्शन दिये। श्री चन्द्रकला जी ने युगल को पान पवाने की सेवा प्रदान की और श्री हनुमान जी ने चरण कमल के संवाहन की सेवा दी। आपने युगल के चरणों में यह लालसा रखी कि यह युगल छवि हमारे हृदय में निरन्तर विहार करती रहे। प्रभु श्री सीतारामजी ने एवमस्तु कहकर आपका मनोरथ पूर्ण किया। अचानक प्रकाश हुआ और झांकी अन्तर्हित हो गई उस समय एक प्रहर रात्रि बाकी थी। श्री महाराज जी सरयू स्नान कर आसन पर आये।

श्री विद्यादास जी श्री महाराज जी की अनुराग मय प्रवृत्ति, भजन, तप आदि श्रेष्ठ सदगुणों को दर्शन करके अतीव प्रसन्न रहते थे। उन्होंने श्री महाराज जी को श्री राम चरित मानस आदिग्रथों का अध्ययन करवाया। श्री महाराज जी ने थोड़े ही दिनों में उन्हें हृदयंगम कर लिया। तब श्री विद्यादास जी ने संतों को कथा सुनाने का आदेश किया। सर्वप्रथम श्री विद्यादास जी के आश्रम में ही विकम सं. १६४० से कथा हुई जिसे सुनकर अवध वासी सन्तों को बड़ा सुख प्राप्त हुआ।

सन्तों के आग्रह पर श्रीमद्वाल्मीकि रामायण की कथा कहने के लिये संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया। कथा भी प्रारम्भ हुई। श्रोताओं की इतनी भीड़ हुई कि श्री विद्यादास जी का भवन अत्यन्त छोटा पड़ गया। तब छावनी के महन्त श्री वैष्णवदास जी ने छोटी छावनी मंदिर के सामने खुले एक विशाल स्थल में कथा की व्यवस्था की जहाँ सन्तों को बड़ा ही सुपास हो गया। उस स्थल में सभी पुराणों, श्रीमद्भागवत, महाभारत, श्रीमदभगवद्गीता आदि ग्रन्थों की कथा हुई। कथा के प्रत्यक्षदर्शी श्रोताओं का कथन है कि कथा में इतनी

अधिक भीड़ होती थी कि जब कथा बन्द होती तब श्रोताओं की अधिकता से रास्ते बन्द हो जाते थे। कथा से श्रोताओं की तीन धारा निकलती थी एक बड़े भक्तमाल की तरफ, दूसरी नया घाट की तरफ और तीसरी प्रमोद वन होकर श्रृंगार हाट और हनुमान गढ़ी, कनक भवन की तरफ जाती थी। श्री महाराज जी की कथा के समय वहाँ टीन की छाया थी। बाद में वर्तमान महन्त श्री नृत्यगोपाल दास जी ने दो मंजिल का विशाल भवन बनवा दिया जिसे वाल्मीकि रामायण भवन कहते हैं और जिसके भीतर सम्पूर्ण श्रीमद्‌वाल्मीकि रामायण का शिला लेख है।

श्री महाराज जी की विद्वता को विचार कर सन्तों ने उन्हें 'पंडित' नाम उपाधि से विभूषित किया तभी से आप श्री पं राम वल्लभाशरण नाम से विख्यात हुये। एक बार श्री महाराज जी के गुरूदेव श्री रामवचन दास जी अयोध्या जी आये और अपने प्रिय शिष्य के उत्कर्ष को देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुये। श्री महाराज जी ने अपने गुरूदेव का दर्शन कर सजल नयन साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया। गुरूदेव ने कहा कि तुम्हारा प्रभाव देख कर हम सफल मनोरथ हो गये हैं। हमारे मन में एक अभिलाषा थी कि तुम्हें पोंड़ी ले जायें और वहाँ के श्री हनुमान जी तथा प्रेमी भक्तों को कथा सुनवायें।

श्री महाराज जी ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे गुरूदेव मैं आपका खरीदा हुआ दास हूँ आप जो आदेश करेंगे मुझे स्वीकार है। तब श्री गुरूदेव श्री रामवचन दास जी ने कहा कि मैं तुम्हारी भावना और विचारधारा से पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। यदि तुम्हें पोंड़ी ले जाऊँगा तो यहाँ के श्रोताओं को दुख हो जायेगा अतः श्री अवध में ही रह कर भक्ति का प्रचार करो और भव ग्रस्त जीवों का उद्धार करो। ऐसा समझा कर गुरूदेव श्री रामवचन दास जी पोंड़ी को प्रस्थान किये।

गुरूदेव श्री विद्यादास जी ने श्री महाराज की उन्नति, भक्ति विद्वता और विनम्रता देख कर, मन्त्र राज उपदेश करने हेतु आदेश किया। अतः सं.१६५१ से श्री महाराज जी मन्त्रोपदेश कर जीवों को भव पार करने लगे। कुछ समय बीतने पर कार्तिक शुक्ल द्वितीया को श्री विद्यादास जी श्री राम मन्त्र का जाप करते हुये श्री साकेत धाम की यात्रा किये।

एक बार श्री महाराज जी ने ध्यान में देखा कि गुरूदेव श्री रामवचन दास जी श्री महाराज जी के सिर पर हाथ फेरते भूरि भूरि आशीर्वाद देते हुये भगवद्धाम से आये हुये विमान में बैठ कर साकेत को प्रस्थान किये। श्री महाराज जी ने एक साधु को भेज कर पता लगवाया तो बात एक दम सत्य निकली।

दीक्षा गुरू तथा शिक्षा गुरू दोनों के भगवद्धाम जाने से श्री महाराज जी का मन उदास रहने लगा तब मन में विचार आया कि –''प्रभु पद अंकित अवनि विशेखी'' श्री चित्रकूट का दर्शन कर लिया जाय और वहाँ श्री हनुमान जी को श्री वाल्मीकि रामायण सुना देंगे। यह विचार मन में आते ही प्रभु की अनुमति स्वरूप दो संत श्री रामसियाशरण (परम हंसजी) तथा श्री रसरङ्गमणि आपके पास आये और बोले कि हम लोग चित्रकूट जाना चाहते हैं, अगर आप चले तो हम लोगों को बड़ा आनन्द आएगा। सहज स्वीकृति हुई और यात्रा बन गई। चित्रकूट पहुँचने पर आप लोगों को 'धाम दर्शन' का सुख तो मिला ही युगल प्रभु ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर कृतार्थ भी किया। चित्रकूट वासी सन्त भक्तों को आपके दर्शन सत्संग से परमानन्द की प्राप्ति हुई।

कुछ दिन चित्रकूट में प्रवास करने पर एक संकट उपस्थित हो गया। श्री महाराज जी को ज्वर आने लगा अनेक प्रकार से उपचार करने पर भी ज्वर नहीं छूटा तब साथ के दोनों सन्तों ने श्री अवध लौट चलने का प्रस्ताव रखा। श्री गुरूदेव ने कहा कि कुछ भी उपाय उपचार कर लो, यह कर्म का भोग है जो पूरे चार महीने रहेगा। श्री अयोध्या जी चल देते पर यहाँ श्री हनुमान जी को श्री वाल्मीकि

रामायण सुनाने का हमारा दृढ़ संकल्प है और हम कल से ही पाठ प्रारम्भ करेंगे नौ दिन के पश्चात आप जैसा कहेंगे वही करेंगे।

दोनों सन्तों ने कहा कि कई दिनों से आपको लंघन चल रही है। आसन से उठने की आपको शक्ति नहीं है तब पाठ कैसे करेंगे। श्री गुरूदेव ने उत्तर दिया कि शरीर तो अत्यन्त निर्बल हो चुका है परन्तु श्री हनुमान जी की कृपा अत्यन्त सबल है। श्री हनुमान जी की कृपा के सहारे ज्वर से नौ दिन का अवकाश हमें मिल जायेगा हमें ऐसा विश्वास है। ज्वर का समय पूरा होने पर नौ दिन तक हम फिर भरपाई कर देंगे। सन्तों ने कहा इस तरह से भरपाई कर देना तो आपके ही वश की बात है।

दूसरे दिन एक प्रहर रात्रि शेष रहने पर श्री महाराज जी ने शौचादि कार्य से निवृत्त होकर मन्दाकिनि में स्नान किया तत्पश्चात दास हनुमान जी के मन्दिर में जाकर एकासन से बैठ कर श्रीभद्वाल्मीकि रामायण का एक पाठ पूर्ण किया। उन्होंने आसन पर आकर फलाहार कर के डेढ़ प्रहर तक रसमय सत्संग किया। मुख मण्डल पर पूर्ण तेज छाया था। (ज्वर की दुर्बलता का पता भी नहीं था।) श्री रसरंगमणि जी की प्रार्थना पर विश्राम किया। इस प्रकार नौ दिन का नवाह पूर्ण कर हवन भी हुआ। दसवें दिन ब्रह्म बेला में महाराज श्री जब मानसी मेंसेवा कर रहे थे तब श्री हनुमान जी ने प्रत्यक्ष दर्शन दिये और वरदान मांगने को कहा। तब श्री महाराज जी ने प्रभु श्री सीताराम जी की निश्छल अविरल भक्ति का वरदान मागा। श्री हनुमान जी वरदान देकर अन्तर्ध्यान हो गये। तब श्री महाराज जी ने मन्दाकिनि में स्नान कर आसन पर आकर नित्य नियम समाप्त किया। सूर्योदय होने के पूर्व ही पूर्व की भाँति ज्वर आ गया। उसी अवस्था में गुरूदेव काशी और फिर श्री अवध आ गये। पूरे चार माह और नौ दिन तक ज्वर का जोर रहा। फिर स्वतः ही चला गया।

एक बार श्री सरयू जी की धारा श्री अवध के घाटों से एक कोश यानी 3 कि.मी. दूर चली गई। नित्य नियम से श्री सरयू स्नान करने वाले सन्तों –भक्तों को बड़ा व्यवधान हो गया। श्री महाराज जी सब सन्तों को लेकर गये। सबने दण्डवत प्रणाम कर स्तुति की और श्री अवध के निकट आने की प्रार्थना की। एक महीना के भीतर महा कटाव कर श्री सरयू जी अपने घाटों पर आ गई। सन्तों को सुपास हो गया। सभी ने जय जय कार की।

श्री महाराज जी का सुयश श्री अवध और बाहर भी दूर दूर तक फैल गया। दूर दूर से लोग नित्य ही दर्शन करने, दीक्षा लेने अथवा कोई शंका, समस्या का समाधान कराने के लिये नित्य प्रति आते रहते थे। एक बार दो साधु एक राम नाम में निष्ठा रखने वाले तथा एक अन्य नाम में निष्ठा रखने वाले दोनों विद्धान विवाद कर बैठे, बड़ा शास्त्रार्थ हुआ पर निर्णय पर नहीं पहुँचे पाये। तब दोनों लोग महाराज जी के पास आये। महाराज श्री ने कहा कि हम खुद ही कुछ निर्णय देंगे तब आप पक्षपात मानेंगे अतः आप लोग बराबर बराबर कागज लेकर उस पर अपने अभीष्ट नाम लिख कर तराजू के पलड़े पर रख दीजिये। ऐसा ही किया गया। महाराज श्री ने तराजू को जैसे ही ऊपर उठाया राम नाम का पलड़ा भूमि पकड़ लिया, दूसरा ऊपर उठ गया। सन्तों ने श्री राम नाम की और श्री महाराज जी की जै जै कार की। दूसरा व्यक्ति जो राम नाम की महिमा को नहीं मानता था, महाराज श्री के चरणों में पड़ गया और मन्त्र दीक्षा लेकर अपने जीवन को धन्य किया।

सभ्य समाज के लोग गुरू और सन्तों को भगवान से भी बढ़ कर मानते हैं। क्योंकि जो तत्व सन्त और गुरू प्रदान करते हैं वह कोई देने वाला नहीं है। वह कौन सा तत्व है जिसे केवल गुरूदेव ही प्रदान करते हैं? वह है ब्रह्म तत्व, परमात्म तत्व, जिसे जान लेने के बाद कुछ जानना बाकी नहीं रहता है। इस परम तत्व को स्वयं भगवान नहीं देते बल्कि भगवान ही सन्त गुरू के रूप में इस जगत में आते हैं

और शरणागत जीव को नाम, रूप, लीला और धाम रूपी परम तत्व देकर भवसागर से पार कर देते हैं। इससे बड़ा दान इस जगत में दूसरा नहीं है। बृज गोपियां इस परम तत्व के दानी को बहुत बड़ा दानी स्वीकार करती हैं। यथा–

तव कथामृतं तप्त जीवनं, कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवण मंगलं श्री मदाततं, भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।
श्रीमद्भागवत १०–३१–६

सामान्यतया लोग इस परम तत्व की महिमा और प्रभाव को नहीं जानते हैं। पर कभी कभी साधकों को भगवत कृपा से परम तत्व का अनुभव हो जाता है। तब लोग समझते हैं कि हमारे गुरूदेव ने हमें कैसी महान वस्तु प्रदान की है।

श्री महाराज जी ने अपने जीवन में असंख्य शरणागत जीवों को वह परम तत्व सुना कर भव–सागर से पार लगाया है। पर अपने जीवन काल में उस तत्व को कम ही लोग समझ पाये। श्री महाराज जी के कृपा पात्र शिष्य की एक घटना इस संदर्भ में उल्लेखनीय है।

मिर्जापुर जिले के अंतर्गत किसी ग्राम में एक क्षत्रिय परिवार के ठाकुर सा. श्री महाराज जी के शिष्य थे। गुरूदेव भगवान के निर्देशानुसार वे सज्जन प्रति दिन नियम से कम से कम छः हजार श्री राम मन्त्र का जाप किया करते थे। क्योंकि हमारे गुरूजनों का आदेश रहता है कि षडाक्षर राम मन्त्र को कम से कम छः हजार तो जपना ही चाहिये। अगर अधिक समय मिलता है तो छः लाख का अनुष्ठान करने का भी निर्देश है। हमारे द्वाराचार्य भगवान कपिल – अवतार श्री स्वामी योगानन्दाचार्य जी का कथन है।

राम मन्त्र निशिदिन जपहु करि निर्जन बनवास।
करि निर्जन बनवास जपहु षडलक्ष षडक्षर।
जागे प्रीति प्रचण्ड देहिं दर्शन सिय रघुबर।।
श्री गुरू कृपा प्रसाद जन्म अरुमरण नसाई।
'योगानन्द' विचारु जात यह जीवन भाई।
धारि माल तुलसी तिलक होहु राम के दास।।
राम मन्त्र निशिदिन जपहु करि निर्जन बनवास।।

अस्तु वे मिर्जापुर के महाराज श्री के कृपा पात्र प्रति दिन निष्ठा से श्री राम मन्त्र का जाप करते थे। उनके गाँव से कुछ दूर किसी कोर्ट में उनका मुकद्दमा चल रहा था। जिसकी तारीखी पर उन ठाकुर सा. को जाना पड़ता था। कचहरी की गांव से दूरी अधिक थी। जहाँ जाने के लिये तारीख के एक दिन पूर्व चलना पड़ता और रात्रि किसी ग्राम में विश्राम करके दूसरे दिन कचहरी उपस्थित हो जाते थे।

एक बार कचहरी जाने के समय ठाकुर सा. के साथ उनके ग्राम के एक सज्जन साथ हो लिये। उनका भी कचहरी में कुछ काम था। रात्रि किसी गाँव में एक परिचित व्यक्ति के घर रूके। रात्रि विश्राम हुआ प्रातः स्नान करके ठाकुर सा. नियम भजन में लग गये। दूसरे व्यक्ति वैष्णव नहीं थे अतः उन्होंने स्नान किया और इनके नियम पूर्ण होने की प्रतीक्षा करने लगे। ठाकुर सा. का भजन पूरा हुआ, तब दोनों लोग प्रसाद पाये और तब चले कचहरी की ओर।

कचहरी पहुंचने पर ठाकुर सा को स्मरण आया कि आवश्यक कागजात तो रात्रि जहा विश्राम किये वहीं छूट गये। वे बहुत परेशान थे क्योंकि कोर्ट में उनकी बहुत आवश्यकता थी। अब समय इतना था नहीं कि जाकर के ला सकें। जानकारी होने पर साथ के व्यक्ति ने कहा कि कहिये तो हम अभी मंगा दें। ठाकुर सा. ने कहा कि कैसे। उत्तर मिला कि कैसे का चक्कर छोड़ो कहो तो मंगा सकते हैं। आप आँख बन्द कर बैठ जाइये। ठाकुर सा. आँख बन्द कर

बैठ गये। थोड़े ही समय में उन्होंने कागजात आपके सामने रख दिये।

कचहरी का काम पूरा हुआ। लौटते समय ठाकुर सा. ने बहुत जोर लगाया कि उतनी दूरी से इतने कम समय में कागज कैसे मंगाये। बहुत आग्रह करने पर उस व्यक्ति ने बतलाया कि मुझे भैरों बाबा की सिद्धि है। उन्होंने ही थोड़े से समय में कागज लाकर दे दिये। ठाकुर सा. के पुनः आग्रह करने पर उस व्यक्ति ने भैरों की सिद्ध करने का मन्त्र और उपाय बतलाया।

अब ठाकुर सा. श्री राम मन्त्र की उपासना छोड़ कर भैरों बाबा की अराधना करने लगे। थोड़े ही काल में अराधना पूरी हुई। भैरों बाबा प्रसन्न हुये। आवाज सुनाई पड़ी मैं भैरों प्रसन्न हूँ वरदान मांगो। क्या चाहते हो। ठाकुर सा. ने कहा कि पहले आप दर्शन दीजिये। भैरों ने कहा दर्शन के चक्कर में मत पड़ो। 'डर जाओगे' जो मांगना वो मांग लो। ठाकुर सा. ने कहा कि मैं नहीं डरूँगा। आप दर्शन दीजिये। तब भैरों बाबा बोले कि "ध्यान से सुनो" सत्य बात यह है कि आपने श्री राम मन्त्र का जाप किया है अतः आपके भीतर राम मन्त्र का इतना तेज है कि मैं आपके सामने खड़ा नहीं हो सकता। अब ठाकुर सा. को अपनी भूल समझ में आई कि मैं ऐसे प्रभावशाली श्री राम मन्त्र को छोड़ कहाँ भटक गया हूँ। उन्होंने भैरों बाबा से यही मांगा कि "मेरी श्री राम मन्त्र में निष्ठा हो जाय" भैरों बाबा आशीर्वाद देकर चले गये।

साधकों के लिये विचारणीय बात है। परमात्मा की भक्ति में दृढ़ता और अनन्यता की बहुत आवश्यकता है। श्री राम जी की भक्ति हमारे जन्म जन्मांतर के सुकृत स्वरूप प्राप्त हुई है उसे त्याग कर अन्य देवी देवता, किसी धनी मानी, प्रभावशाली व्यक्ति से आशा करना साधक के लिये बहुत घातक है।

गुरू त्यागो भवेन्मृत्यु, मन्त्र त्यागो दरिद्रता।
गुरू मन्त्र परित्यागी रौरवं नरकं बृजेत।।
राम भद्रं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते।
कुम्भीपाके महाघोरे पच्यते नात्र संशयः।।
(लोमश संहितायां शिव वाक्य)

छोटी छावनी श्री मणिराम दास जी की छावनी के महंथ श्री वैष्णव दास जी अब अधिक वृद्ध हो गये थे। एक दिन उन्होंने श्री महाराज जी को बुलवाया और कहा कि हमें तो श्री प्रिया प्रियतम जी बुला रहे हैं। अतः हम तो जा रहे हैं। हमने अभी तक किसी को महन्त नहीं बनाया। आपको सभी चाबी सौंप रहे हैं। आप जिसे उचित समझें उसे महन्त बना दीजियेगा। ऐसा कहा और स्थान की सभी चाबी देकर धाम चले गये। श्री महाराज जी ने बड़ी छावनी के महन्त जी और अन्य स्थानो के कुछ विशिष्ट महन्तों को बुलाकर समस्या रखी कि किसको महन्त बनाया जाय। सभी ने निर्णय आपके ही ऊपर छोड़ दिया कि आप जिसे उचित समझें उसे ही बनाइये। श्री महाराज जी ने श्री वैष्णवदास जी के शिष्य श्री रामचरण दास जी को श्री महन्त बनाया जिससे श्री अवध के सन्त महन्तों को बड़ी प्रसन्नता हुई।

अभी तक श्री महाराज का आसन छोटी छावनी में ही था और कथा भी वहीं कहते थे। अब अलग स्थान कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में प्रभु ने किस तरह विधान बनाया उसे वर्णन करते हैं।

श्री महाराज जी के छोटे गुरूभाई जो कि श्री विद्यादास जी के साधक शिष्य भी थे, श्री कल्याण दास जी जिनका नाम था। एक दिन उनको श्री हनुमान जी ने दर्शन दिया और आज्ञा प्रदान की कि एक भक्त कल तुम्हें कुछ रुपया प्रदान करेंगे। उन रुपयों से अपने बड़े गुरूभाई श्री पं. राम

वल्लभा शरणजी के नाम से भूमि खरीद लेना और फिर समय पाकर कागजात उन्हें सौंप देना। श्री हनुमान जी आज्ञा देकर अन्तर्ध्यान हो गये। श्री कल्याण दासजी ने छोटी छावनी के पास ही आठ बीघा जमीन श्री महाराज जी के नाम से खरीद ली। उसमें दो कमरे बनवा कर उसके कागजात श्री महाराज जी को सौंप दिये और थोड़े ही समय पश्चात् भगवद्धाम को पधार गये।

श्री महाराज जी प्रातः काल जप कर रहे थे उसी समय प्रभु की यह मंगलमय वाणी सुनाई पड़ी कि आपका अलग स्थान बन गया है अतः उस नवीन स्थान में जाकर रहिये इसी में मेरी प्रसन्नता है। यद्यपि श्री महाराज जी के मन में परम वैराग्य था और अलग स्थान बने ऐसी कोई रूचि नहीं थी पर प्रभु की आज्ञा सर्वोपरि है। अस्तु वि. सं. १९५३ में आप जानकी घाट पर स्थित नवीन स्थान में आ गये। दो सन्त श्री रामानुज दास तथा श्री शीतल दास महाराज जी के साथ ही नवीन स्थान में आसन लगाये।

श्री हनुमान जी की विशेष कृपा से स्थान बना अतः उसकी सुरक्षा और संभाल श्री हनुमान जी ही करते थे। श्री गुरूदेव के प्रथम शिष्य एक सनाढ्य ब्राह्मण श्री श्याम सुन्दर दास थे। श्याम सुन्दर दास जी बड़े ही गुणवान तथा साधु सेवी थे। श्याम सुन्दर जी को किसी कार्यवश कहीं जाना था अतः उन्होंने अपने कुछ रुपये श्री महाराज जी के पास रख दिये। महाराज जी ने वे रुपये मंदिर में रख दिये। किसी चोर की उन पर नजर पड़ गई। रात्रि में उसने मंदिर की दीवार को फोड़ कर मार्ग बना लिया किन्तु उसने जैसे ही रुपयों की थैली को हाथ लगाया हनुमान जी ने बस एक घुड़की दी वह चोर अन्धा हो गया।

चोर इतना डर गया कि रुपयों की थैली तो उसने छोड ही दी। साथ ही प्रतिज्ञा की कि मैं अब चोरी नहीं करुँगा।

ऐसी प्रतिज्ञा करते ही उसको पुन नेत्रों की ज्योति प्राप्त हो गई। तीसरे दिन उसने अपने मुख से सारी घटना बताकर महाराज जी के चरणों में निवेदन करते हुये क्षमा माँगी। श्री गुरूदेव ने क्षमा तो किया ही उसे भगवान के भजन का मार्ग भी समझा दिया। जिससे उसका लोक परलोक सब सुधर गया। इस घटना से सभी ने यह बात स्वीकार की कि स्थान की रक्षा, सँभाल और देखभाल श्री हनुमान जी कर रहे हैं।

श्री विद्यादास जी के कृपा पात्र मारवाणी भक्त प्रहलाद दास जी ने अपने गुरूदेव से पूछा कि आपके धाम जाने के पश्चात हमारे लिये कौन आधार है तब उनके गुरूदेव ने श्री महाराज जी की ओर संकेत किया। श्री विद्यादास जी के धाम गमन के पश्चात प्रहलाद दास जी श्री महाराज जी के प्रति पूर्णतया समर्पित हो गये। उन्होंने ठाकुर जी के नित्य बाल भोग की व्यवस्था अपनी ओर से कर दी।

फैजाबाद निवासी अग्रवाल जी के अस्सी हजार रुपये कहीं डूब रहे थे। रुपये मिलने की कोई आशा नहीं रह गई तब उहोंने श्री महाराज जी के चरणों में पुकार लगाई तब महाराज श्री ने कुछ यत्न कर दिया जिससे अग्रवाल जी के रुपये मिल गये। उसने महाराज श्री का बड़ा उपकार माना और दस साधुओं के भोजन की व्यवस्था सदा के लिये कर दी।

एक बार कुछ अयोध्या जी के प्रतिष्ठित सन्तों ने निवेदन किया कि आपके आश्रम में सब प्रकार से आनन्द है। बस एक कमी है कि कुछ कमरे बन जाते जिससे ४०–५० साधु आश्रम में रह सकें। महाराज जी ने कहा कि हमने अभी तक कुछ नहीं किया। जो कुछ हुआ सब हनुमान जी की लीला है। अब आगे भी कुछ करवाना होगा तो हनुमान जी प्रबन्ध करेंगे।

यह बात चल रही थी तब वहीं बैठे हुये एक सज्जन ने निवेदन किया कि मुझे मकान बनवाने का अनुभव है मैं कम लागत में अच्छे कमरे बनवा दूँगा। महाराज श्री की आज्ञा मिलने पर उन्हीं सज्जन ने थोड़े ही समय में अच्छे कमरे बनवा दिये और उनके खर्चे का हिसाब महाराज श्री के समाने रख दिया। उस हिसाब के अनुसार महाराज जी के पास पांच सौ रुपये कम पड़ रहे थे। जो थे वो रुपये दे दिये। अब पांच सौ बाकी रह गये। महाराज जी को कुछ कर्जा होने की चिन्ता हो गई जिसको दूर करने की व्यवस्था श्री हनुमान जी ने इस प्रकार कर दी।

उसी दिन एक पंजाबी सज्जन महाराज श्री के पास आये और एक रुपयों की थैली रख कर निवेदन किया कि मैं सरयू जी स्नान करके अभी लौट कर थैली ले लूँगा। महाराज श्री ने उसे अन्यत्र रखने को कहा परन्तु वह तो थैली छोड़ कर गया तो गया। वापिस आया ही नहीं। महाराज जी ने पूरे दिन उसकी प्रतीक्षा की , रात्रि में श्री हनुमान जी ने स्वप्न में दर्शन दिया और कहा कि रुपयों की थैली हमने ही रखी है आप पूरे पाँच सौ रुपये जिसका कर्जा है उसे दे दीजिये, किसी प्रकार की चिन्ता नहीं कीजिये। स्थान का वैभव दिन पर दिन बढ़ता जायेगा। आप खूब उत्सव करवाइये, भगवान को विविध व्यंजनों से भोग लगवाइये और साधु सन्तों की सेवा कीजिये।

श्री हनुमान जी स्वप्न में आदेश देकर अन्तर्हित हुये और श्री महाराज जी ने उस सज्जन, जिसके पांच सौ रुपये बाकी थे को बुलाकर रुपये प्रदान कर दिये। इसके पश्चात तो आश्रम का सर्व विधि विकास हुआ। देश विदेश में महाराज श्री की और उनके अनुगत शिष्यों प्रशिष्यों की कीर्ति ध्वजा आज भी फहरा रही है।

श्री सत्यनारायण व्रत–कथा लोक में प्रसिद्ध है परन्तु शिव संहिता ग्रन्थ के अन्तर्गत वर्णित श्री रामार्चा जी का प्रभाव प्रायः लुप्त ही था। श्री महाराज जी के द्वारा श्री रामार्चा जी का बड़ा ही प्रचार हुआ। लोगों ने श्री रामार्चा जी के प्रभाव को समझा तब से अभी तक श्री अवध में और बाहर भी श्रद्धालु भक्त श्री रामार्चा जी का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। बड़ी से बड़ी लौकिक और परमार्थिक समस्याओं का समाधान जो कहीं अन्य उपाय से संभव न हो तो वह श्री रामार्चा जी की कृपा से प्राप्त हो जाता है।

श्री महाराज जी कितने महान थे, इसको उनका प्रत्यक्ष दर्शन और उनकी अमृतमयी वाणी श्रवण करने वाले ही समझ सकते हैं। ऐसे प्रत्यक्षदर्शी भाग्यशाली जनों का यह अनुभव था कि महाराज श्री परात्पर प्रभु के अंशावतार थे। अस्तु उनकी जितनी महिमा का गायन किया जाय सब कम है। श्री महाराज जी तेरासी (८३) वर्षों तक इस धरा धाम में रह कर जीवों का कल्याण करते रहे और विक्रम सं. १९९८के कार्तिक मास शुक्ल पक्ष दशमी को इस लोक की लीला का संवरण कर नित्य साकेत धाम को प्राप्त किये।

श्री महाराज जी का स्थान उनके ही नाम से (श्री राम वल्लभा कुंज जानकी घाट) आज भी श्री अवध धाम में जगमगा रहा है। श्री महाराज जी के धाम गमन के पश्चात उनके कृपा पात्र वेदान्ती श्री राम पदारथ दास जी महाराज श्री महन्त हुये जिनके द्वारा स्थान का बहुत विस्तार हुआ।

अपने गुरूवर की आरती उतार लीजिये।
उतार निज जीवन सुधार लीजिये।।
अपने गुरूवर की आरती उतार लीजिये।
उतार निज जीवन सुधार लीजिये।।

उनके अनेक सुयोग्य शिष्य प्रशिष्य हुये। श्री वेदान्ती जी के धाम गमन पश्चात उनके कृपा पात्र वेदान्ती श्री हरिनामदास जी गद्दी पर विराजे जो कि बड़े विद्वान और प्रभावशाली महापुरुष थे म. श्री हरिनाम दास जी के बाद वर्तमान महन्त श्री वेदान्ती राम शंकर दास जी गद्दी की शोभा बढ़ा रहे हैं। वर्तमान महन्त बड़े ही विद्वान, सरल और सरस कथा वाचक तथा बड़े ही लोकप्रिय हैं। हम उनके चिरायु और मंगलमय जीवन की कामना करते हैं।

श्री मणीरामदासजी की छावनी (छोटी छावनी) के महन्त अनन्त श्री सम्पन्न श्री नृत्यगोपाल दास जी महाराज तथा उत्तराधिकारी श्री कमल नयन दास जी की हमारे स्थान श्री राम वल्लभा कुंज पर सदैव कृपा बनी रहती है। दोनों महापुरुषों की कृपा आगे भी बनी रहे ऐसी प्रार्थना है। हमारे स्थान के वर्तमान अधिकारी श्री राजकुमार दास जी सदैव श्री महन्तजी महाराज की ढाल बनकर उनकी और आश्रम की सुरक्षा सँभाल प्राण पण से करते रहते हैं। हम उनके चिरायु होने की कामना करते हैं।

इस लघुग्रंथ में जिन जिन महापुरुषों का स्मरण किया गया है उनके चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हुये प्रार्थना करते हैं कि आप सभी आशीर्वाद दें जिससे इस दास की श्री सीताराम जी के पाद पद्मों में निरन्तर प्रीति बढ़ती रहे।

श्री गुरुदेव भगवान की आरती

श्रद्धा स्वर्ण थारी शुभ सुमन सजाइये।
हृदय के नेह सींच ज्योति जलाइये।।
प्रीति भरे अश्रुबिन्दु दृग सँवार लीजिये।। अपने.
आत्मा वसन अंग उज्जवल समान हैं।
सुन्दर सुभग संत वेश में महान हैं।।
राखि नित्य निज हिय में श्रंगार कीजिये।। अपने.
हृदय के बीच सियाराम झलकात हैं।
युगल के हिये गुरूदेव सरसात हैं।
इनमें अन्तर कहाँ है सौ निहार लीजिये।। अपने.
जब लगि धरा सूर्य चन्द्रमा सुहावने।
दर्शन देवें गुरूवर सुख से लुभावने।।
'दास' सुमन बरषि जय जय कार कीजिये।। अपने.

श्री रामवल्लभाकुञ्ज की स्तुति

।। सुबह की प्रार्थना ।।

भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप निहारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभासिंधु खरारी।।१।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनंता।।
करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्रीकंत।।२।।

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै।।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।३।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सूरभूपा।
यह चरित जे गावहि हरिपद पावाहि ते न परहि भवकूपा।।४।।

दोहा – विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुण गो पार।।

भई प्रकट कुमारी भूमि विदारी जनहितकारी भयहारी।
अतुलित छवि धारी मुनिमनहारी जनकदुलारी सुकुमारी।।
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुताशन द्युतिकारी।
सिर छत्र विराजे सखिगण भ्राजे निज–निज कारज करधारी।।
देखाहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहिं आनन्द भरहिं पायँन परहिं हरषाई।।
ऋषि नारद आए नाम सुनाए सुनि सुख पाए नृप ज्ञानी।
सीता अस नामा पूरण कामा सब सुख धामा गुण खानी।।
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी।
लालत तन लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृप–रानी।।

सुनि मुनिवर बानी सिय मुसकानी लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़भागी उर लाई।।
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लागेउ मन लाई।
अस्तुति सियकेरी प्रेमलतेरी वरनि सुचेरी सिर नाई।।
दोहा – निज इच्छा मख–भूमि ते, प्रकट भई सिय आय।
चरित किए पावन परम, वर्द्धन मोद निकाय।।

।। शयन त्र्रारती की प्रार्थना।।

वन्देविदेहतनया पदपुण्डरीकं, कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम्।
हन्तु त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं, सन्मान्सालिपरिपीतपरागपुञ्जम्।।

(किशोरावस्था रूपी सुगन्ध से योगियों कें चित्त को हरण करनेवाले, तीनों तापों को नष्ट करने के लिए निरन्तर परमहंस मुनियों द्वारा सेवन करने योग्य, भक्तों के मानस रूपी भ्रमरों द्वारा भली प्रकार पीये गये परागवाले, ऐसे श्रीविदेहकुमारी के चरणकमलों की मैं वन्दना करता हूँ।)

दूर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रं हेमाम्बरं वरविभूषणभूषिताङ्गम्।
कन्दर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्तिं, पूर्तिं मनोरथभवं भज जानकीशम्।।

(जिनके शरीर की सहज कांति दुर्वादव के सदृश है, जिनके खिले हुए कमल जैसे बड़े और सुन्दर नेत्र हैं, जिनके अङ्ग - अङ्ग श्रेष्ठ अंलकारों से अंलकृत हैं, जिनकी करोड़ों कामदेव के समान मनोरम किशोरमूर्ति है, सब प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करनेवाले उन श्रीजानकीपति श्रीराम का हम श्रद्धापूर्वक भजन करते हैं।)

।। शाम की प्रार्थना।।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज–लोचन, कंज–मुख, कर–कंज, पद–कंजारुण।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, भवनील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर–चाप–धर, संग्राम–जित खरदूषण ।।

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव–दैत्यवंश–निकन्दनं।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथनन्दनं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर–शेष–मुनि–मल–रंजनं।
मम हृदय कुंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनं।।
जय जनकनन्दिनी जगत वन्दिनी जन अनन्दिनी जानकी।
रघुवीर नयन चकोर चंदनी वल्लभा प्रिय प्राण की।।
तव कंज पद मकरंद सेवित योगी जन मन अलि किये।
करि पान गिनत न आन हिय निर्वाण सुख आनत हिये।।
सुख खानि मंगल दानि जन जिय जानि शरण जो जातु हैं।
तब नाथ सब सुख साथ कर तेहि हाथ रीक्त बिकातु हैं।।
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवन दिवन निशि अभिलाषही।।
तनु पाइ तुमहिं विहाई जड़मति आन देव सुसेवहीं।
हत भाग्य सुरतरु त्यागि करि अनुराग रेड़हि सेवहीं।।
यह आस रघुवर दास की सुखरास पूरण कीजिये।
निज चरण कमल सनेह जनकविदेहजा वर दिजिये।।
मन जाहिं राचेउ मिलहिं सो वर सहज सुन्दर साँवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनैह जानत रावरो।।
एहि भांति गौरि असीस सुनि सहित हियँ हरषी अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदितमन मन्दिर चली।।

सो.– जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

दो.– मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर।
अस विचार रघुवंशमणि हरहु विषम भव भीर।।
कामिहिनारि पिआरी जिमिलोभिहि प्रिय जिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम।।
प्रणतपाल रघुवंशमणि करुणा सिंधु खरारि।
गएं शरण प्रभु राखिहैं सब अपराध विसारि।।
श्रवण सुयश सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि–त्राहि आरत हरन शरण सुखद रघुवीर।।
अर्थ न धर्म म काम रुचि गति चहों निर्वाण।
जन्म जन्म रति राम पद यह वरदान न आन।।

(सियावररामचन्द्र की जय)

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।

(प्रभो! आप शरणागतरक्षक हैं। आपके चरणारविन्द सदा–सर्वदा ध्यान करने योग्य, माया–मोह के कारण होनेवाले सांसारिक पराजयों का अन्त कर देनेवाले तथा भक्तों की समस्त अभीष्ट वस्तुओं का दान करने वाले कामधेनुस्वरूप हैं। वे तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाले स्वयं परम तीर्थस्वरूप हैं। शिव, ब्रह्मा आदि बड़े–बड़े देवता उन्हें नमस्कार करते हैं और चाहे जो कोई उनकी शरण में आ जाय, उसे स्वीकार कर लेते हैं। सेवकों की समस्त आर्ति और विपत्ति के नाशक तथा संसार–सागर से पार जाने के लिए जहाज हैं। महापुरुष! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों की वन्दना करता हूं।)

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मी,
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।

(भगवान्! आपके चरणकमलों की महिमा कौन कहे? रामावतार में अपने पिता दशरथजी के वचनों से देवताओं के लिए भी वाञ्छनीय और दुस्त्यज राजलक्ष्मी को छोड़कर आपके चरणकमल वन–वन घुमते फिरे। सचमुच आप धर्मनिष्ठता की सीमा हैं और महापुरुष! अपनी प्रेयसी सीताजी के चाहने पर जान–बूझकर आपके चरणकमल मायामृग के पीछे दौड़ते रहे। सचमुच आप प्रेमकी सीमा हैं। प्रभो ! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों को वन्दना करता हूं।)

यस्यामलं नृपसदस्यु यशोऽधुनापि,
गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेन्द्रपट्टम्।
तं नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टपादाम्बुजं,
रघुपतिं शरणं प्रपद्ये।।

(भगवान् श्रीराम का निर्मल यश समस्त पापों को नष्ट कर देनेवाला है। वह इतना फैल गया है कि दिग्गजों का श्यामल शरीर भी उसकी उज्ज्वलता से चमक उठता है। आज भी बड़े–बड़े ऋषि

महर्षि राजाओं की सभा में उसका गान करते रहते हैं। स्वर्ग के देवता और पृथ्वी के नरपति अपने कमनीय किरीटों से उनके चरणकमलों को सेवा रहते हैं। मैं उन्हीं रघुवंशशिरोमणि भगवान् श्रीरामचन्द्र की शरण ग्रहण करता हूं।)

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं,
कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम्।
हन्तु त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं,
सन्मान्सालिपरिपीतपरागपुञ्जम्।।

किशोरावस्था रूपी सुगन्ध से योगियों के चित्त को हरण करनेवाले, तीनों तापों को नष्ट करने के लिए निरन्तर परमहंस मुनियों द्वारा सेवन करने योग्य, भक्तों के मानस रूपी भ्रमरों द्वारा भली प्रकार पीये गये परागवाले, ऐसे श्रीविदेहकुमारी मे चरणकमलों की मैं वन्दना करता हूं।)

पारे गिरां गुणनिधे श्रुतयो वदन्ति,
रूपं त्वदीयमपरं मनसोप्यगम्यम्।
साक्षात् कथं सरजिजाक्षि भवेदृते ते,
बुद्धौ कृपामनुकृशोदरि मादृशां तत्।।

(हे गुणनिधे! हे कमलनयनी! हे कृशोदरी! वेद आपके अपार दिव्य रूप को वाणी से परे और मन से भी अगम्य कहते हैं। वह रूप आपकी कृपा के बिना हम जैसों की बुद्धि में कैसे साक्षात् अनुभव को प्राप्त हो सकता है।)

याचे हमम्ब रघुनन्दनमूर्तिभावं,
सार्द्ध त्वयातिदृढ़मञ्जलिनाविशेषम्।
त्वं देहि वेत्तृवरदे मुनिसंघमुख्या,
मन्यन्ति वल्लभतरां स्वपतेभवन्तीम्।।

(हे माता! मैं अपके साथ सतत तथा अजिदृढ़ श्री रघुनन्दन के स्वरूप में अत्यन्त प्रेम को अञ्जलिबद्ध होकर मांगता हूं। हे सर्वज्ञों को वरदान देनेवाली! आप यह वर दीजिए क्योंकि मुनि समूह में जो मुख्य हैं वे आपको अपने पति श्रीरामचन्द्रजी की अतिवल्लभा मानते हैं।

चार्वङ्गिते चरणचारणवन्दिसङ्ग
मह्यं विदेहतनये परिदेहि नान्यम्।

याचे वर वरविदां वरदे भवत्या,

येनामुना तव धवे मम रञ्जना स्यात् ।।

(हे श्रेष्ठ ज्ञानियों को वरदान देनेवाली! हे सुन्दराङ्गी! हे विदेहकुमारी! चरण सेवा करने वालों की प्रणाम करने वाले अर्थात् भक्तों के भक्तों का संग मुझे प्रदान कीजिये जिससे (इस संग से) आपके स्वामी श्रीरामचन्द्रजी में मेरी अनुरक्ति हो। आपसे और कोई दूसरा वर नहीं मांगता हूं।)

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवंता।
मो द्विज हितकारी जय असुशरी सिन्धुसुता प्रिय वंता।।
पालन सुर धरणी अद्‌भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई।।१।।

जय जय अविनाशी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा।।
जेहिं लागि विरागी अति अनुरागी विगतमोह मुनिवृंदा।
निशि वासर ध्यावहिं गुण गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा।।२।।

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अधारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा।।
जो भव भय भंजन मुनि मन रजन गंजन विपति वरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी शरण सकल सुरजूथा।।३।।

सारद श्रुति शेषा रिषय अशेषा जा कहूं कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना।।
भव वारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुण मंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्धि सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा।।४।।

।। श्री गुरूदेव बड़े महाराजजी की स्तुति ।।

जय जय श्री गुरु रामवल्लभाशरण कृपाला।
लीलामय अवतार करत संतन प्रतिपाला।।
गुरु वशिष्ठ सम तेज देखि मुख पाप नशाहीं।
बुद्धि वृहस्पति सरिस विमुख आश्रित बन जाहीं।।
लाखन शिष्य बनाय के, अमित पतित पावन करत।
बड़े–बड़े नृप द्वार पर, दरश आश ठढ़ रहत।।

विप्रवंश लै जन्म अयोध्या मध्य पधारे।
श्री जानकीघाट निवास ऊर्ध्वरेता व्रत धारे।।
करि अपार तप कियो दरश हनुमत सियवर को।
वर्षत अमृत कथा मात कीन्हों जलधर को।।
वाणी कोमल बाल सम, सरल स्वभाव उदार अति।
श्रीरामवल्लभाशरण प्रभु, कोटिन दीनन दीन्ह गति।।
सिद्धि दई बहु शिष्यन को, हरि भक्ति दई भव फंद छड़ाई।
कूप गिरे नहि अंग छये जल, मंत्र महा महिमा दरशाई।।
श्री सरयू जब दूर गईं, सब संत दुखी लखि पास बुलाई।
पुत्र विहीनन पुत्र दियो, धनहिन चले सिर छत्र धराई।।
श्री रामार्चा प्रचार करि, कियो जगत कल्याण।
नित्य नये अचरज चरित, कहं लौ करौं बखान।।
बंदा बार–बार सिर नाई, देहु दया करि कष्ट मिटाई।
देहु प्रेमनिधि प्रभु पद प्रेमा, सदा मंत्र जपिहौं दृढ़ नेमा।।
कवि जयरामदेव तव दासा, मस्त रहे गुरु के विश्वासा।
यह गुरु स्तुति गावै जोई, सब जग मंगलमय तेहि होई।।
हे गुरुदेव दयानिधे, देहु यहै वरदान।
नित्य मिलैं साकेत पति, श्री सियाराम सुजान।।

।। श्रीगुरुदेव श्रीवेदान्तीजी महाराज की स्तुति।।

जय गुरुदेव दयालु दयामय जयति सदा सुख धामा।
जय श्री राम पदारथ स्वामी वेदान्ती शुभ नामा।।
जय जग भूषण अपगत दूषण जय संतन प्रिय कारी।
जय वैष्णव कुल पूज्य प्रभाकर दीनन के हितकारी।।
जानकी घाटा अनुपम ठाटा शुचिता रुचिर सुहाई।
रामवल्लभाकुंज अनूपम जहँ मन्दिर बनवाई।।
सुभग सिंहासन बीच विराजत राजत सिय पिय झांकी।
जन मन मोहत सब विधि सोहत तहँ सुषमा अति बाँकी।।
गम्भीर स्वरूपा ऋषि वर रूपा पावन चरित अनुपा।
सुनि यश आये वाञ्छित पाये शरण भये बहु भूपा।।
श्री गुरु गीता दिव्य पुनीता जो सादर नित गावै।
भानुदत्त मधुरेश जीव सो भुक्ति मुक्ति ध्रुव पावै।।
सिद्धि दई बहु सन्तत को अरु लाखन भक्त अनूप बनायो।
मन्दिर में निज सावन उत्सव के हित स्वर्ण हिन्डोल रचाओ।।

अवध में मानस जन्मभूमि को तुलसी स्मारक वृहर रचवायो।
भारत साधु समाज में सादर नित्य सभापति को पद पायो।।
सिद्ध प्रसिद्ध रहे जग में मधुरेशहिं को जिन यो अपनायो।।
मंत्रराज दै जनन को, किये अमित उपकार।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, धन्य–धन्य संसार।।
वेदान्ती गुरुदेव की, स्तुति करै मन लाय।
लहि कर सीताराम रति, अन्त परम पद पाय।।

।। श्री गुरुदेव भगवान की जय।।

ॐ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय, नमः आर्यलक्षणशीलव्रताय, नमः उपशिक्षितात्मन, उपासितलोकाय, नमः साधुवादनिकषणाय, नमः ब्रह्मण्य देवाय, महापुरुषाय, महाराजाय नमः।

(हम ॐकार स्वरूप पवित्रकीर्ति भगवान् श्रीराम को नमस्कार करते हैं। आप में सत्पुरुषों के लक्षण, शील और आचरण विद्यमान हे,आप बड़े ही संयतचित्त, लोकाराधनतत्पर, साधुता की परीक्षा के लिए कसौटी के समान और अत्यंत ब्राह्मणभक्त हैं। ऐसे महापुरुष महाराज श्रीराम को हमारा बारम्बार प्रणाम है।)

"श्री जानकीवल्लभो विजयते"
श्रीमते रामानन्दाय नमः
।।श्रीसद्गुरवे नमः।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं।
भावतीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तन्नमामि।।१।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।२।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।३।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।४।।

अखण्डानन्द बोधाय शिष्यसन्तापहारिणे।
सच्चिदानन्दरुपाय तम्से श्रीगुरवे नमः।।५।।

नित्य गुरु स्तुति

जय जय श्री हरिनाम दास गुरुदेब कृपाला।
करुणामय अवतार करत भक्त प्रतिपाला।।
दिव्य सूर्यसम तेज निरखि त्रयताप नशाहीं।
करत विमल उपदेश अवनि तल भक्तन्ह माहीं।
वचनामृत बरसाई कै कुटिल हृदय पावन करत।
गुरवर परम उदार अति अश्रु धार नयनन भरत।।
ब्राह्मण वंश पुनीत जन्म लै अवधहिं आये।
जानकी घाट पवित्र तहाँ मुनि वेश बनाए।।
श्रुति पुरान पढ़ि वेद कठिन व्रत धारण कीन्है।
लखन सहित सियराम हनुमंतहि वंश कर लीन्हैं।।
सुन्दर सरल स्वभाव मृदु शिशु समवचन प्रवीन।
कोटिन भटके जनन के श्री हरि शरणहिं कीन।।
मन्त्र दियो बहु भक्तन को सिय राम को अनूप लखायो।
पापी अधी भटके जनको प्रभु के शुभ धाम को पन्थ दिखायो।
पावन मानब जीवन के हित ईश्वर प्रीत की रीति बतायो।
धन पुत्र दियो बहु लोगन को रघुनाथ अनाथहिं का अपनायो।
मन्त्र राज उपदेश करि तारे भक्त अनेक।
लखि चरित्र गुरुदेव के उघरहिं विमल विवेक।।
पुनि पुनि चरण कमल सिरनाई।
प्रभुपद भक्ति देहु दृढ़ाई।।
सुमिरत गुरुपद दिव्य प्रकाशा।
सदा रहौं श्री गुरु के पासा।।
जो यह श्री गुरु अस्तुति गावै।
मंगलमय श्री हरि पद पावै।।
गुरुवर कृपा निधान प्रभु, दीजै यह वर नाथ।
नित्य विराजे हृदय में, सिय सहित रघुनाथ।।

श्री हनुमत्–स्तवन

।। सोरठा।।

प्रनवउँ पावनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणं माहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्।।

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम्।

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्राञ्जिलरारञ्जनेयम्।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्जनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरूमूलवासिनं भावयामि पवनानन्दनम्।।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जिलम्।
वाष्मवारिपरिपूर्णलोचनं मारूतिं नमत राक्षसान्तकम्।।

आरती बजरंगबली की

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै, रोग–दोष जाके निकट न झाँकै।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाए, लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, लाये सँजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे, अहिरावन के भुजा उखारे।।
बाँई भुजा असुर संहारे, दाई भुजा सब संत उबारे।।
सुन नर मुनि जन आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई।।
हे हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुन्ठ परमपद पावे।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई, तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

आरती कीजै.....

श्रीराजकुमार दास जी महाराज

अधिकारी श्री राम वल्लभाकुंज जानकी घाट श्री अयोध्याजी

(वर्तमान श्री महन्तजी श्री राम शंकर दास जी महाराज)
श्री महाराज जी का आशीर्वाद–
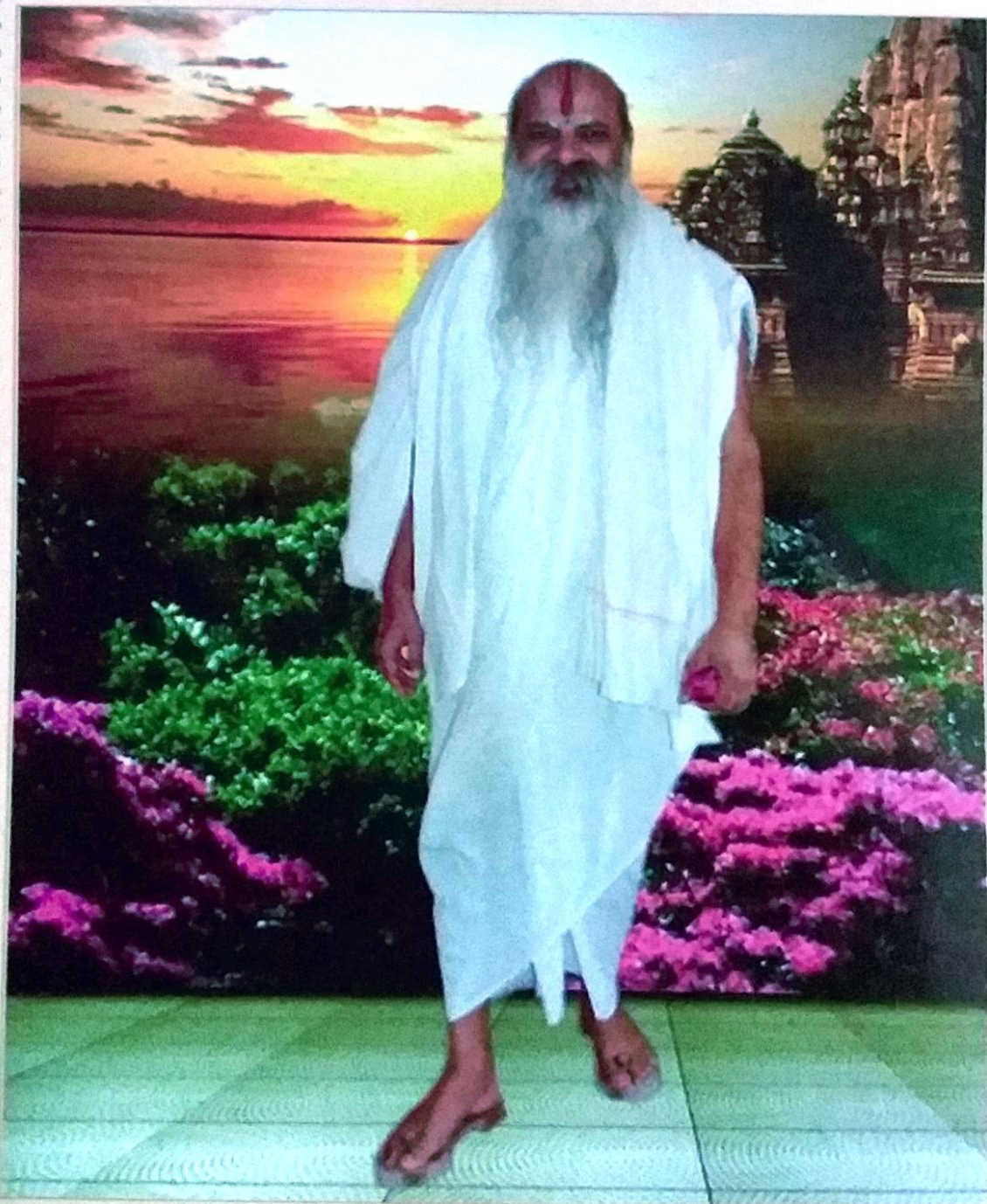
प्रातः स्मरणीय श्रीपूज्यपाद अनन्तश्री विभूषित
पं. श्रीरामशंकरदासजी महाराज 'वेदान्ती'